अंक-58-59

मार्च-जून 2010

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

माटी के रंग
माटी के संग

❑ कमलेश राय के एगो गीत

हम होरी-हलकू कऽ वारिस,
माटी में मेहनत बोईलां ।
सगरी उमिर पीर सहि के हम,
खेत-खेत किस्मत बोइलां ।।

नाहीं कवनो आड़-छाँह, नाहीं केहू रखवारा
असरा कऽ उजियार हिया में, पाँव तरे अन्हियारा
आन्ही बीच बरत दियना हम,
जरि-जरि जोति नखत बोईलां ।।

साले रात पहार पूस कऽ भले जेठ तन जारे
बाढ़ बहा दे सपना सगरी, सूखा भले उजारे
बरगद कऽ छतनार गाछि,
हम माथे छाँह आ छत बोईलां ।।

हमरे पीढ़ी पाँव देइके, थिरके महल-अटारी
हमरे से अरमान सजे, हमरे से उहां दिवारी
आपन जिनगी जरा-जरा के,
हमहीं ताज-तखत बोईलां ।।

नया किचेन शास्त्र

❑ हीरा लाल 'हीरा'

एने कुँआ ओने खाई
बोलऽ केने जइबऽ भाई?

राहि बहरबऽ जेकर ऊहे
तहरा राही काँट बिछाई।

चमचा बनी थाल के शोभा
सिउंठा बस दरियें रहि जाई।

गाँव खोरि मुखिया बनि जाईं
नाही केहू धूरि लगाई।

कलछुल अस जे हेने होने
कूदी फानी, फरी फुलाई।

तावा अस परहित जरला में
खाली करिखा देहि पोताई।

पलटा अस पलटे जे हरदम
ऊ परमेश्वर पंच बदाई।

भागि भगोना के ना जागी
हरदम अदहन पीही खाई।

भितरे-भीतर रोई कलपी
खाली 'कूकर' अस चिचिआई।

●●●

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी
संपादक
डा० अशोक द्विवेदी
संपादन सहयोगी
विष्णुदेव, सान्त्वना, हीरा एवं सुशील
डिजाइन आ ग्राफिक्स
वर्तिका
सज्जा
आस्था
कंपोजिंग
कम्प्यूटर्स प्वाइण्ट, भृगु आश्रम-बलिया

विशेष प्रतिनिधि
गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' (गोरखपुर), सुशील कुमार तिवारी (नई दिल्ली), विजय राज श्रीवास्तव (लखनऊ), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), विष्णुदेव तिवारी (बक्सर, आरा), विनय बिहारी सिंह (कोलकाता), गंगा प्रसाद 'अरूण' (जमशेदपुर), डॉ० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डा० कमलेश राय (मऊ, आजमगढ़), डा० प्रकाश उदय, विनोद द्विवेदी , डा० वशिष्ठ अनूप (वाराणसी), आकांक्षा (मुम्बई), मिथिलेश गहमरी, कुबेर नाथ पाण्डेय (गाजीपुर), हीरालाल 'हीरा'(बलिया), आनंद संधिदूत, विजय दुबे (मिर्जापुर), प्रभात कुमार तिवारी (तूरा, मेघालय)
इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा० ओम प्रकाश सिंह

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक
संपादन-कार्यालयः-
टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001
फोन- 05498–221510**, मो०-** 09415819453
e-mail :- ashok.dvivedi@rediffmail.com
एह अंक पर सहयोग- 25/-
सालाना सहयोग राशि 130/-

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ : ओसे ~~पत्रिका परिवार क सहमति जरूरी नइखे~~)

पाती

;भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका

www.bhojpuripaati.com

अंक 58–59 (संयुक्तांक) **मार्च–जून 2010**

एह अंक में.....

हमार पन्ना
- भेदभाव हटावे खातिर, औरत का पक्ष में 'बहुमत' के मोहर/२-३
- 'तरक्की' का नाँव पर आफत के न्यौता/३-४

समसामयिकी
- 'घर बेघर परदेसी भोजपुरिया' : आकांक्षा/५-६ हस्तक्षेप
- का बबुआ तहरो अफीम के.....: प्रमोद कुमार तिवारी/७-८

ललित व्यंग
- स्वागत नया साल के : राजगुप्त/९-११

समस्या
- नक्सली समस्या : शिलीमुख/१४-१५

अन्दरूनी लोकतंत्र
- टूटत परिवार : छीजत सम्बन्ध ; सान्त्वना/१६-१८

कविता/गीत/गज़ल
- हीरा लाल हीरा/ कवर पेज-२
- कमलेश राय/ कवर पेज-२
- अशोक द्विवेदी/१२-१३
- विजय राज श्रीवास्तव/१३
- शम्भुनाथ उपाध्याय/१८
- गोरख 'मस्ताना'/२९
- विजय मिश्र/४२
- बृजमोहन 'अनारी'/११
- कन्हैया पाण्डेय/ ४६

कहानी
- धरम बदलउवल के मानस : आनन्द सन्धिदूत/२०-२४
- हरिजन एक्ट : गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश'/२५-२९

कसौटी
- गोरख पाण्डेय के कविता : सुशील कुमार तिवारी/३०-३२
- अकेल हंस रोवेला ए राम, पुनर्पाठ : विष्णुदेव/३३-३९

धारावाहिक
- मंत्रीजी के पत्रकार से बतकही : डा० रामदेव शुक्ल/४०-४१

लघुकथा
- जाँच रिपोर्ट : विनोद द्विवेदी/१९

राशिफल
- डा० नरेन्द्र कुमार तिवारी/४३-४५
- क्षेत्रीय समाचार/३९

राउर पन्ना
- पाठक लोगन क 'पाती'/४७-४८

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

(एक) भेद भाव हटावे खातिर, औरत का पक्ष में 'बहुमत' के मोहर

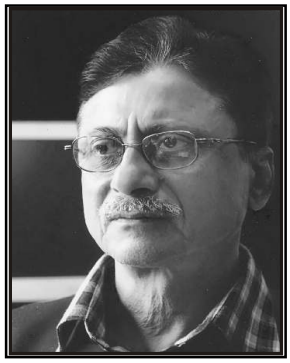

आखिर कार 'महिला आरक्षण-विधेयक' राज्य सभा में पास हो गइल। चउदह-पनरह बरिस से कांखत-कूंखत, आगा-पीछा घुसकत, धक्का-मुक्की, हाथा -पाई से गुजरत दुनिया के एह सबसे बड़का लोकतंत्र में, ई विधेयक आखिरस राज-सभा क मोहर लगवा लिहलस।

आज जबकि दुनिया के हर देश, अपना समाज के दकियानूसी सोच-विचार रूढ़ि आ विषमता के दूर कइ के, समतामूलक समाज बनावे में लागल बा; हमनी के देश 'मर्द आ औरत' के भेदभाव आ गैर बराबरी वाला यथास्थिति बनवले खातिर हुज्जत कर रहल बा। पुरातनपंथी, सामन्ती नजरिया आ सोच का चलते, आजो लइका, लइकी में भेद कइल जा रहल बा। अइसना में जब देश का संसद में औरतन खातिर 33 प्रतिशत आरक्षण क बिल तइयार भइल त हर बेर पेश होखे का समय कुछ लोगन के अड़ंगा, हुल्ल-हपाड़ा आ अराजक नौटंकी का कारण, बिना कवनो सार्थक बहस के वापस हो गइल। एहू बेरी कुछ सांसदन के अमर्यादित, अभद्र आचरण आ अभूतपूर्व हंगामा का बावजूद, एकरा पर बहुमत के मुहर लागल।

दुख एह बात क बा कि जवन लोग आरक्षणे का बल पर ससद में पहुँचत बा ऊहे, एह कमजोर आ हक से वंचित औरतन का आरक्षण के विरोध करत बा। समता के पोषक होखला के दावेदारी अउर बात बा, समता बनावल कठिन बा। अपना फायदा - नुकसान का तरजूई पर राजनीति करे वाला एह समता आ समाजवादी लोगन क कुतर्क ई बा कि एमें पिछड़ी जाति आ मुस्लिम लोगन खातिर अलगा से कोटा तय होखे। अगर ई लोग, सचहूँ दलित, पिछड़ा आ अल्पसंख्यक के अतना हमदर्द बा त अपना पार्टी के पचास प्रतिशत टिकट, अइसने वंचित, लोगन के काहे नइखे देत? ए लोग के, के रोकत बा अइसन करे से? अगर जाति, क्षेत्र, आ आर्थिक हैसियत के लेके कवनो विसंगति भा 'कमी' नजर आवतो बा त आरक्षण - व्यवस्था में ओके दूर करे खातिर फेरबदल बादो में कइल जा सकेला। होखहूँ के चाहीं। एगो व्यवस्था त सुप्रीम कोर्टे देले रहे कि जाति आ वर्ग का आधार पर दिहल जाए वाला आरक्षण में, मलाईदार परत (आर्थिक रूप से संपन्न आ बड़का लोगन के) लाभ से बाहर राखल जाय। बाकि आरक्षण का आधार पर, राजनीति करे वाला इहे लोग एके ना मानल।

खैर, कम से कम एतना त भइल कि एह लोकतांत्रिक देश के एगो संसद में 'बहुमत' क बात मानि के राजसभा से 'महिला - विधेयक, पास भइल। भारत के औरतन खातिर नौ मार्च १० एगो ऐतिहासिक दिन बन गइल। नवरातर में हर साल अपना देश में आवे वाली 'माई बहुत खुश होइहें। आखिर एइजा के कूल्हि औरत उनहीं

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

के न अंश भा रूप हई सऽ। "विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।" पुरूष लोग त खाली 'माई' से शक्ति आ उर्जा, लेबे जाला। अपना आकांक्षा भा स्वारथ के पूर्ति खातिर भा सुख- सफलता माँगे आ लेबे खातिर जाला। फेर , नौ दिन बितला पर उनके जाए खातिर कहेला। उनका नाँव प धइल कलशा आ मूर्ति के विसर्जन करे आ बिदा करे खातिर अकुता जाला।

'माई' हर साल एही तरे हाल-चाल लेबे, जाने खातिर आवेली। आम में मोजर, महुवा में कोंचा, फरल फुलाइल बाग बगइचा, खेत -खरिहान में अन्न आ घर परिवार के बढ़न्ती के उपहार लेके आवेली। नीम के डार पर झुलुवा झूलेली। नेह, सरधा आ ममता से गीत गाइ के औरते उनके झुलावेली स ऽ। माई झुलत-झुलत पियासेली त मालिन से पानी के निहोरा करेली। ई मोह -ममता आ नेह भरल अधिकार क निहोरा हऽ। ई पियास तब्बे मिटेला जब आंतर में हुलास, सरधा आ प्रेम होखे। फेर माई एही नेह का तरी से जुड़ाली आ गद्गद होके असीसेली -कि "तहार सोहाग बनल रहो, तहरा परिवार के मंगल आ बढ़न्ती होखो।" त राजसभा में बइठल ओह कूल्हि पुरूष वर्ग के धन्यवाद बा कि ऊ लोग 'माई' के कुछ देबे खातिर तत्पर भइल। जे ना दिहल चाहत रहे, माई ओहू लोग के सदबुद्धि देसु।

(दू) 'तरक्की' का नाँव पर आफत के न्यौता

प्राकृतिक सुधराई पहाड़, झरना, जंगल, घाटी दह, ताल, झील तरह के बाग-बगइचा से सजल एह कृषि प्रधान देश के पारंपरिक आ नीमन चीज जस -जस खतम होत जा रहल बा, वातावरण में विपरीत आ अनिष्टकारी बदलाव आवत जा रहल बा। तरक्की का नाँव पर हमन का देश में जवन कुछ सरकार; केन्द्र आ राज्य करत बिया आ जवना तौर तरीका से करत बिया, ऊ या त 'वोट' बैंक या दलगत फायदा-नुकसान से जुड़ल बा, या अन्याय आ शोषण से विलग नइखे हो सकल। अपना कारगुजारी के, उज्जर पक्ष के काल्पनिक दार्शनिक लेहजा में बखान करत खा ओकरा करिया आ विपरीत पक्ष के एकदमे अनदेख क दिहल जाता।

विकास आ आधुनिकता का अभियान में कवनो सरकार प्रकृति आ प्राकृतिक संपदा के नुकसान भा विकास का कारगुजारी से आइल अनिष्टकारी नुकसान का बारे में, ना त सचेत बिया ना गंभीर। विकास का नावँ पर जवन कुछ होता ओसे हवा-पानी प्रदूषित होखे त होखे, धरती से नदी, जंगल आ हरियाली गायब होत होखे त होखे, खेती का जमीन में उपजाऊपन आ भूगर्भ जल में कमी आवत होखे त आवो, पिये का पानी में आर्सेनिक बढ़ो त बढ़ो कुछू फर्क पड़े वाला नइखे। खनिज -संपदा के दोहन आ आधुनिक 'स्टक्चर' खड़ा करे में नदी, मोड़ दिहल जाई, बन्हा जाई, पहाड़ उड़ावल जाई, जंगल कटाई आ बहुत कुछ अइसन होई, जवना से प्रकृति के संतुलन बिगड़ी। एकरा खातिर कवनो बरियार आ सटीक परिकल्पना आ तइयारी नइखे हो पावत।

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

एह सबका नतीजा में आज मानव -जीवन पर संकट घहरात जात बा। सूखा, गर्मी, भूकंप, बाढ़, भूस्खलन आ जल क संकट बढ़ल जात बा। तरक्की का साथ, तरक्की के कचरा बढ़ल जात बा। ई कचरा आफते बा हमनी खातिर।

खेती वाला जमीन टुकड़ा टुकड़ा बँटात -बिकात पक्का मकानन का नया जंगल में तब्दील हो रहल बा। शहर कस्बा का निगिचा के खेत, सोना का भाव में बिकात, लुटात आ ओरात जा रहल बाड़न स ऽ। बुझल। अब आगा, घर का हाता आ आँगना में मटर, मरिचा, तरकारी आ धनिया -बोवाई। बनलो सड़क कोड़ल जात बाड़ी सऽ, धूल, धुआँ डीजल-पेट्रोल के गैस, एह भीषण गर्मी आ आँच में मिलि के, दमघोंटू हालत बना रहल बाड़ी स, ई कवना भविष्य के देखा रहल बा? पानी आ बिजुली क जेवन हाल बा, बस रामे दुहाई।

हमनी का, तरक्की का नाँव पर अनजाने, कई गो आफत के एक्के सँगे न्यौता दे देले बानी जा। सरकारी व्यवस्था, जतने समतामूलक, भेद-भाव रहित, सुखी आ आधुनिक समाज बनावे का ओर बढ़ रहलि बा आ आपुसी भेद भाव, ऊँच-नीच, अमीरी-गरीबी क खाई अउर गहिर भइल जात बिया। नया नया धनी आ सोर्श-फोर्स वालन के एगो नया वर्ग तइयार हो रहल बा। अर्थ-प्रधान रेस वाला एह समय में तरक्की का नाँव पर धाम-लूह, गरीबी, भूख, शोषण आ अन्याय क शिकार लोग भला का करी? खाली मोबाइल, टी.वी. आ रेडियो से त ए लोगन क भला होखे वाला नइखे। जरूरत बा अइसना लोगन के जिये आ आगा बढ़े खातिर सुरक्षित माहौल बनवला के, अइसन व्यवस्था दिहला के कि सबके कम से कम साफा हवा, पानी, आ आड़-छाँह के-अलम त मिल सको।

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

घर-बेघर : परदेसी भोजपुरिया

❑ आकांक्षा

लोग कहेला ! कि आदमी जहिये धरती पर जनमेला - ओकरा संघर्ष क शुरुआत ओही समय से हो जाला। जिनिगी का आखिरी, पौदान ले 'संघर्ष' शब्द आखिरी दम तक आदमी के जीवन-कहानी में कवनो न कवनो रूप में कमबेसी रहबे करेला। ई संघर्ष इन्सान का भीतर आ बाहर दूनों स्तर पर चलत रहेला। हमनी का देस में, खासकर भोजपुरिहन का साथे एह पैदाइशी संघर्ष के अजबे दारुन कथा बा।

मुंबई में तीन बरिस से रहत-रहत, हमके ई अनुभव भइल बा कि अगर आदमी मिलनसार होखे आ सभका से अच्छा व्यवहार करे; त बहुत कमे समय में लोग चीन्हें, जाने आ माने लागेलन। उहाँ क्षेत्र आ भाषा क भेद आ दूरी धीरे-धीरे मिटे लागेला। मराठी, गुजराती, सिन्धी, पंजाबी, तमिल, कोंकणी, तेलगू, असमिया, भोजपुरी लगभग हर तरह के भाषा बोली बोले वाला, अलग-अलग आमदनी-वर्ग वाला लोग ओइजा रहेला। सबका संगे मिलजुल के काम करे, नोकरी करे भा मेहनत-मजूरी करे में तालमेल बइठावत, जिनिगी कठिनाई आ संघर्षों में, आगा घुसुके-दउरे लागेले।

'लोकल' आ 'बाहरी' के भेदभाव आ द्वन्द थोर बहुत हर जगहा बा; बाकि एने कुछ समय से मुम्बई में मराठी मानुस के आन्दोलन चलावे वाला लोगन का राजनीति कारन, इन्सान से इन्सान के बीच भेदभाव, अलगाव, दूरी, शोषण आ अपमान क सिलसिला चल रहल बा। आ एकर ढेर शिकार हिन्दी भाषी भा हिन्दी प्रदेश क निवासी, खासकर भोजपुरिहा लोग ढेर हो रहल बा। एह तरह के आन्दोलन क्षेत्रीयता आ भाषाई राजनीति के हवा देके बढ़ावे वाला लोगन का व्यवहार पर; उहाँ के वोट बैंक के राजनीति, सरकार आ प्रशासन के चुप रहल भा कठोर कदम ना उठावे का कारन बा। अब इहाँ तक कहल जाए लागल बा कि गैर मराठी, भा गैर प्रदेश क लोग इहाँ से भाग जाव; आ अगर एहिजा रहे के होखे त जइसे मराठी आन्दोलन चलावे वाला कहँ स, ओइसहीं रहे। मुँह जाब लेव, गारी आ लात-जूता खाके चुप हो जाव। कि मुम्बई खाली ओही लोगन क हऽ, दोसरा के ना हऽ। जइसे कि ऊ हिस्सा भारत क ना होके, कवनो फरका भा अलगा क राज्य होखे।

अइसनका माहौल आ स्थिति में, एहर का लोगन क संघर्ष अउरू कठिन बा। जवन संघर्ष पहिले 50 प्रतिशत रहे; अब बढ़ि के 90 प्रतिशत हो गइल बा। माने कि जवन लोग ओइजा जाके आपन खून-पसेना-बुद्धि-बल आ बेंवत लगाके, उहाँ के खेती-बारी, उद्योग-धन्धा आ सेवा-व्यवसाय के बनावे बढ़ावे में आपन जांगर खपावल, ऊ केनियों क नइखे। ओह राज्य के आधुनिक बनावे आ प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से सजावे-सँवारे वाला एने के लोग का कमाव-खाव, का बचावो आ का लेके लवटो?

जवन लोग, साग-भाजी-तरकारी फल, चाय - समोसा बेंच के, टेक्सी आटो आ रेक्शा चलाके, मेहनत मजूरी से घर दुआर, सड़क आफिस, बंगला, स्टेडियम, होटल-फ्लाईओवर बनवा के, दूध-दही बेंचिके, खोमचा आ ठेला लगा के समाज के मूलभूत जरूरतन के पूरा करें में दिनो-रात जुटल बा, ओके आपन आ अपना बाल-बच्चन के जिनिगी बचावे आ सँवारे खातिर, का का नइखे भुगते के पड़त? 'टाइम-कुटाइम' आ 'मौसम' क परवाह ना क के जवन, लोगन के ट्रेन, आ फ्लाइट पकड़वावे खातिर रेस लगावता; ऊहो त बेचारा आदिमिए हऽ। बदला में अइसना लोग के अगर गारी, अपमान आ लात-घूँसा मिले लागे त ओकरा जिनिगी के लड़ाई क पीड़ा 50 प्रतिशत अइसहीं बढ़ि जाई।

स्कूल, प्रशिक्षण-संस्थान, खेल-कूद, नौकरी हर मामला में क्षेत्रीय दबंगई आ दखल आखिर का बयान कर रहल बा ? भारत जइसन लोकतांत्रिक देश, जहवाँ विविधता आ संस्कृतियन का एकता के बल-बूता क बखान कइल

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

जाला, उहाँ ई का हो रहल बा ? राजनीतिक भूगोल में भले एह देश के ईस्ट, वेस्ट, साउथ, नार्थ (पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन) में बाँटल गइल रहे बाकि ओकर दिल एके नियर धड़कत रहे। अबे हालहीं में दिल्ली, मुम्बई के आतंकी हमला आ विस्फोट से केकर दिल ना घड़कल रहे ? देश क कवन हिस्सा ना रहे, जवन एके लेके चिन्तित, दुखी आ क्रोधित ना भइल ? फेर काहें ई सौतेला व्यवहार ? काहें ई परायापन ?

यूपी, बिहार के लोग देश के बड़ बड़ महानगरन के अपना श्रम आ मेहनत से सजले-सँवरले बा। एह मेट्रों शहरन क सड़क, मकान, बिजली-पानी ठीक करे करावे में गिट्टी, बालू, ईंटा ढोवला से लेके, जरूरत क हर समान एक जगह से दुसरा जगह पहुँचवला में एह प्रदेशन के मजदूर आ कामगार आपन खून-पसेना एह खातिर नइखन स बहावत कि ऊ अपना लोकतांत्रिक अधिकार से वंचित कइल जाँ सन, आ काम कराइ के दुर-दुरावल, भगावल जा सन।

कहीं कहीं त डंडा का जोर पर यू.पी. बिहार के मजदूर आ श्रमिकन के बरियाई काम करावल जात बा आ बदला में मजूरियो नइखे मिलत। मुम्बइये ना, अबे हालही अखबारन में गोवा जइसन साक्षर शिक्षित राज में यू.पी. बिहार के मजदूरन के जबरन ले जाके, लात घूंसा आ डंडा का जोर पर काम करवला के कई कई गो वृत्तान्त छपल। अइसन बरियाई काम करावे वाला ओह राज में, बुझला कानून से ऊपर बा या कि सत्ता के ओकरा पर 'वरदहस्त' बा, तबे न मीडिया में अइसन खबर बार-बार अइलो पर उहाँ क पुलिस-प्रशासन चुप बा। अइसनका पीड़ित, प्रताड़ित, शोषित आ दबाइल कुँचाइल लोग जब उहाँ से भाग के इहवाँ आवत बा त रो रोके आपन दुर्दषा सुनावत बा।

लोकतंत्र में हक भा अधिकार के लड़ाई गलत नइखे; बाकिर आपन अधिकार जतावे खातिर; दोसरा के मूल अधिकार बंधक बनावल कहाँ तक उचित बा ? हमनी के विकास के हवाला देके, आधुनिक बने के, ढिंढोरा पीट रहल बानी जा आ आपन तुलना रूस, अमेरिका, ब्रिटेन आदि विकसित देशन से कर रहल बानी जा; बाकिर एह हालात में त कबो-कबो इहे बुझाये लागत बा कि हमनी के सौ साल पीछे चल गइल बानी जा। बेरोजगारी, अशिक्षा आ गरीबी का कम बा ? ऊपर से आतंकवाद आ मजहबी उन्माद। अलगाव, भेदभाव, नफरत आ आपुसी लड़ाई कबो विकास के सीढ़ी ना बन सकेला। एह तरह से हर राज्य आ प्रदेश आपन-आपन डफली बजावे लागी आ आपन राग अलापे लागी। ई देश सबकर हऽ आ सब एही देश क नागरिक हऽ। सबका योगदान के मूल्य बा। हर भाषा-भाषी चाहे ऊ कवनो क्षेत्र भा कवनो धर्म आ सम्प्रदाय के होखे, अपना इन्सानी रूप में एह देश में स्थापित लोकतंत्र के मजबूत अंग बा। फिर एक अंग अपना दोसरा अंग के काटि के कवना ऊँचाई आ महातम के पाई?

कबो-कबो हम सोचीला कि सत्ता-कुर्सी आ 'पावर' से जुड़ल राजनीति आ स्थानीय-क्षेत्रीय 'वोट बैंक' पर कब्जा खातिर होखे वाली राजनीति, कबहूँ 'लोक' के एकता आ आपुसी प्रेम-सहजोग के पनपे ना दिहल चाही। सत्ताधारी पक्ष-विपक्ष के लड़ाई में, हमेशा 'डिप्लोमेसी' वाला अंदाज में, अपना जिम्मेदारी से पल्ला झारी। ऊ तब्बे 'ऐक्शन' में आई, जब ओकरा अपना राजनीतिक दल भा प्रशासनिक अस्तित्व पर खतरा लउकी। अइसना में घर-बेघर परदेसी भोजपुरियन के फरियाद आ तकलीफ के सुनी ?

●●●

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

हस्तक्षेप

का बबुआ ! तोहरो के 'अफीम' के सवख ह ?

❑ प्रमोद कुमार तिवारी

भोजपुरी इलाका 'बनारस' के बाशिंदा अउर हिन्दी साहित्य में नवजागरण के बिगुल फूँके वाला भारतेंदु हरिश्चंद्र 1875 ई.में "भारत दुर्दशा" नाम से एगो नाटक लिखले। एह नाटक में तमाम तरह के अइसन पात्र बाड़े स,जवनन के कारण, ओह घरी भारत लगतार पिछड़त रहे । कुछ पात्रन के नाम बा आलस, अंधकार, निर्लज्जता, सत्यानाश, फौजदार आदि । ई सब ओह नाटक के भारतदुर्दैव नामक शैतान के सेना के अंग हवे स, जवना के ऊ भारत विजय खातिर भेजले रहे । एहनी के काम भारतीय जनता के मन –मस्तिष्क पर अधिकार जमा के पंगु बनावे के रहे।

हमरा पक्का यकीन बा कि अगर भारतेंदु बाबू एह नाटक के आज लिख रहल होखतन त एकर एगो पात्र 'क्रिकेट' जरूर होखित । कई बार मीडिया के लोग आ अउर कुछ खबर विशेषज्ञ लोग क्रिकेट के भारत के धर्म के संज्ञा देवेले । हमरो एह बात से कवनो विरोध नइखे कि क्रिकेट भारत खातिर धर्म हो गइल बा । बाकिर धर्म के एहिजा भारतीय परंपरा के शब्द 'धर्म' के रूप में ना बलुक रिलीजन के रूप में देखे के चाही। उहे रिलीजन जवनाके आज से लगभग 150 साल पहिले जर्मनी के एगो महान दार्शनिक 'अफीम' कहले रहले । जइसे अफीम खा लिहला के बाद, सही गलत के पता ना चलेला ओही तरे एह रिलीजन के भूत जब एक बेर देहीं पर चढ़ जाला त फेर कुछो ना लउके। ओइसे त पूरा भारते एह भूत के चपेट में बा , बाकिर भोजपुरिया इलाका के लोग के क्रिकेट के लेके उत्साह देखते बनेला । भले एह इलाका से एकहूँ खिलाड़ी टीम में ना होखे । ओइसे भी जेतना फालतू के समय आ दूसर लोग का करत बा एकरा प बतकुच्चन करे खातिर मौका भोजपुरिया लोगन के पास होखेला, देश में शायदे कवनो अउर भाषा वाला लोग के पास रउआ के मिली । बबुआ लोग गाय- भइंस ले के सिवान में जाले त कान से रेडियो सटवले रहेले आ क्रिकेट के कमेंट्री प मन, बचन, करम से समर्पित रहेले । ओह घरी अगर मवेशी केहू के खेत में हेल के फसल जियान क देवे अउर अगर खेत वाला कुछ कहे लागे त बाबू लोग ओकरा के अइसे देखेले, जइसे कि ओह जाहिल के एतनो नइखे बुझात कि ई केतना बड़ काम कर रहल बाड़न अउर ऊ केतना छोट बात के लेके खिच्चिर कर रहल बा। कमेंट्री सुनेवाला लोग स्मार्ट समझल जाले अउर जेकरा के क्रिकेट के जेतना जादा रिकार्ड याद रहेला ऊ ओतने महान मानल जाला । ई बात सभे जानत बा कि क्रिकेट में जवन होला ऊ सब रिकार्डे होला।

शतक मारब तबो रेकार्ड , शून्य प आउट होखब तबो रेकार्ड, कवना मैच में कवन नंबर प रउआ बैटिंग-बॉलिंग कइनी, उहो रेकार्ड, माने रेकार्ड से बाहर उहाँ कुछो ना होखे।

क्रिकेट के धर्म भा रिलीजन कहे के पीछे कुछ कारण अउर बा, जवन दूनो पर एकसमान लागू होखेला। ई विशेषता अइसन ह जवन भारतीय लोग अउर भोजपुरिया समाज पर कुछ ढेरे सटीक बइठेला। जइसे पहिला चीज कि धर्म के सोझा तर्क कबहूँ ना राखे के चाहीं। ई तर्क के ना, आस्था के चीज ह, एकरा में अच्छा-बुरा, नीमन-बाउर जइसन कवनो चीझ ना होखे। बस! तेंदुलकर खेलत बाड़े त खेलत बाड़े एह दौरान अउर कुछो ना हो सके। माने अगर माई कहत बिया कि आटा ओरा गइल बा, जा के गेहूं पिसा ले आवऽ बबुआ! काहे अबेर करत बाड़? त जवाब मिली कि 60 रन प खेलत बा 10 ओवर में तेंदुलकर के शतक लाग जाई एकरा बाद चल जाइब।

दूसरका बात कि धर्म में एगो जुनून भा कहीं कि नशा होला । एकरा आगे हर चीज फीका लागेला। माने अगर मैच शुरू होखे वाला बा आ रउआ घर से दूर बानीं त समय पर पहुँचे खातिर सौ के इस्पीड से मोटरसाइकिल चलावल जा सकेला, या फेर लाइन कट गइल त कवनो कीमत पर बैटरी खरीदल जा सकेला। छोट भाई मैच देखे भा सुने में डिस्टर्ब करत बा त ओकरा के पीटल जा सकेला । एही जुनून के अंतरराष्टीय बाजार में बहुत कीमत बा। क्रिकेट के बाजार के आकाश में पहुंचावे में एह जुनून के बड़का हाथ बा।

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

तिसरका बात कि धर्म के चमत्कारन से बहुत गहिर संबंध होला। हमनी के देश चमत्कारन के देश ह । आम आदमी से लेके नेता तक, रोजे चमत्कार करत रहेले। क्रिकेट अकेला अइसन खेल ह, जवना में सबसे जादा चमत्कार के संभावना होला। रउआ ई ना कह सकीं कि अगिला 10 साल में भारत के फुटबाल टीम ब्राजील के हरा दीही, बाकिर मुहल्ला के क्रिकेट टीम कवनो दिन आस्टेलिया के हरा सकत बिया। ई चमत्कारे के देन ह कि हमनी के जीते से जादा व्यक्ति के रेकार्ड के अउर चउका-छक्का के महत्व देबेनी जा।

क्रिकेट में एह चमत्कार के शब्द बदल के अनिश्चितता कहल जाता, जवना से हमनी के जन्म जन्मांतर के साथ ह। खेती ;बारिस के चमत्कार से ले के पढ़ाई अउर यात्रा तक, सब एही पर टिकल बा। एही चमत्कार के मानसिकता के कारण सबसे जादा रेकार्डधारी भारतीय टीम में बाड़े। हमनी के समाज में डीह बाबा से ले के कवनो गली गुचा में एगो पिंडी रखा जाए चाहे सेंनुर से टिका जाए, बस हो जाला चमत्कार कथा के शुरूआत। अइसन अइसन कहनी आ, अफवाह ओकरा से जुड़ जाला कि अगर राउर श्रद्वा नाहींओ होखी त कवनो अनिष्ट के आशंका से रउआ माथा झुकावे लागब ।

सवाल ई बा कि आखिर भारत में एतना सारा खेल होखला के बादो धर्म खाली क्रिकेट काहें बनल। त एकरा पाछे ठोस कारण बा। पहिला चीज खाली क्रिकेट अइसन खेल ह जवन एक दिन से लेके पाँच दिन बझावल राखल जा सकेला । क्रिकेट अकेला खेल ह जवना में हर ओवरे में बलुक हर गेंद पर विज्ञापन देखावे के सुविधा मिलेना । फुटबॉल आ हॉकी वगैरह में खेल शुरू हो गइल त फेर हॉफ टाइम से पहिले तक विज्ञापन कंपनी वालन के बस इंतजार करे के पड़ेला। इहे ना, हो सकेला कि गेंदबाज खिलाड़ियन के जल्दी से आउट कइके खेल जल्दी खतम क देवे तब त विज्ञापन वालन के नुकसान हो जाई से एह जादातर अइसन पिच बनावल जाला जवना में कम से कम 300 रन बने आ मैच जादा देर तक चले । एक समय रहे जब 250 रन बहुत मानल जात रहे बाकिर देखते देखत पूरा दुनिया में 300 से ऊपर रन बनल आम बात हो गइल । जादा रन, जादा शतक, जादे चमत्कार माने कि जादे जुनून अउर कंपनी वालालोग इहे त चाहत रहे । एकरा अलावा भारत के आबादी लगभग एक अरब 20 करोड़ बा, कवनो अउर देश के तुलना में एकर बाजार बहुत बड़ बा। माने मुनाफा जबरदस्त बा। जवन टीवी वाला एक -एक गो मैच खातिर 50 करोड़ रूपया तक दे सकत बाड़े स ओहनी के रउआ अंदाजा लगा लीहीं । अब त भारत में क्रिकेट क्लब के दौर शुरू हो चुकल बा आईपीएल, आईसीएल नाम से क्लब चलावे वाली संस्था बन चुकल बाडी.स। एहनी के लगे एतना ताकत बा कि अगर रउआ भारत में मैच ना होखे देब त एक हप्ता में ऊ अफ्रीका के सरकार के एतना पइसा दे दीहें स कि ऊ राजी खुशी इहां मैच के सब व्यवस्था क दीही।

दरअसल ई सारा पइसा, सारा ताकत आवेला कान तर रेडियो सटवले गाय चरावत ओह युवा के जुनून से, जवना खातिर क्रिकेट धरम हउए अउर तेंदुलकरआ सहवाग भगवान। देश के ना जाने कतना क्षमता वाला जवान एकरा चक्कर में पूरा जिनगी खराब क लिहले। ना जाने कतना परिवार एकरे कारन नरक के जिनगी जी रहल बा । बाकिर एह अफीम के नशा बा कि उतरे के बजाय लगातार अउरी चढते जात बा।

●●●

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

ललित व्यंग

स्वागत नया साल के

❑ राजगुप्त

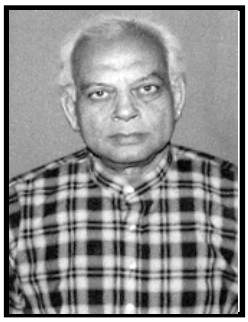

हे नया साल ! आजु के बरिस में हमनी का बहुत खुश बानी जा। एह खुशी के मोका पर पचास रूपया किलो चाउर के भात खाके नब्बे रूपया के दाल के पानी पियत बानी जा। सब्जियन के बचावे में दवाई एतना छिड़िके के पड़ता कि सभकी थरिया में सब्जी के कटोरी खालिये लउकता। चीनी एतना सस्ता हो गइल बा कि मीठा के स्वाद फीका हो गइल बा। ई हमनी के बड़प्पन बा कि बीस रूपया किलो के आटा परात में साने के पहिलहीं गील हो जाता। सउने-मसुने में घर के बेकतिन के खान-पान के दुर्दशा के बादो एतना के सुख जरूर बा कि हर हाथ में मोबाइल त बा।

कार आ मोटर सायकिल शहर आ गाँवन में पोखरा में सिधरी आ चल्हवा लेखा भरल बाड़ी स। रेलगाड़ियन के आपसी दूरी बहुते कम हो गइल बा। तेज रफ्तार से चले वाली रेलगाड़ियन के हालि ई बा कि स्टेशन पर चाय बेचे वालन की तरे अंड़सल बाड़ी स। सरकारी स्कूलन में पढुवन के कमी बा। चरवाहा विद्यालयन के हालि कवनो छूपल नइखे। दुपहरिया के खाना के लालच लड़िकन में ओरा गइल बा। हलुआ आ खीर पूड़ी से ओन्हनी के लार नइखे चुवत। ओइजा के दुरबेवस्था से सभे आजिज आ गइल बा। निजी स्कूलन में पइसा देके नाव लिखवावत बा आदमी। तब्बे न दक्खिन के इस्कूल चालीस से पचास लाख रूपया लेके डाक्टरी में भर्ती करावताड़स। साँच पूछीं त अब मच्छर मार दवाई मच्छरन पर असर नइखी स करत। अइसना में सांसदन के विचार में कोट-कचहरी के टांग अड़ावे के पड़Sता।

रउरा इयाद होई, पियाज के दाम बढ़ला के कारन एगो नीक सरकार के सत्ता से हाथ धोवे के पड़ल रहे। मंहगाई के कवनो हउवा नइखे रहि गइल। काहे से कि कोड़ा के कमाई बहुते बढ़िया बा। प्रदेश में अरबो के अनाज- घोंटाला हो रहल बा। ओकरा बादो केहू खइला बेगर मुअत नइखे।

बीतल बरिस में कारो के खजाना हाथे लागल ह तब्बे न मुफ्ते में सायकिल बँटाता। आम के आम गुठली के दाम? लड़िकिन के शादियों-विआह पर सरकार खुलि के दूनू हाथ से लुटावतिया। खाली एतने से सबुर नइखे होखत त जननी सुरक्षा में जाने केतना ले सुविधा बा। लड़िकी ना चाही कवनो बाति ना। गरभ के बच्चा सरकारी संपति ह। जन्माई बाकिर कूड़ा पर जनि फेंकी। सरकार गोद ले ली। पाले-पोसे के सज्जी खरचा उठाई। केतना नीक पिछला साल के बेवस्था बा। अइसन ताम-झाम पर रउरा अगराइब। हे नया साल! रउरा आइब त उनहूं से बढ़ि-चढ़ि के करब। बे हाथ उठवले मुँह में कवर धरब।

छप्पर फाड़ि लक्ष्मी बरिसत बाड़ी। जाने का बाति बा ? छठा वेतन आयोग लागू हो गइल बा। कर्मचारी खुशी में जंगल में मोर लेखा मस्त होइके नाचत बाड़े। काहे से कि सोना बीस हजारी आ चानी तीस हजारी हो गइल बा। इतिहास के पढ़वइया जानत बाड़े। आपन देश कबों सोने के चिरई कहात रहे। देश के एतना प्रगति के बाद आजु सब रोल्ड-गोल्ड पहिरत बा। ऊहो सोना चाँनी से कम नइखे। भुलाइयों जाव गम नइखे।

जहिया अपना देश में दूध दही के नदी बहत रहे तहिया सभके दूध ना मवस्सर होत रहे, बाकिर आज के जमाना में पच्चीस रूपया लीटर पनिगर दूध कीनि के सब चाय पियत बा। मुँहें दूधो ठेंकता।

सांच पूछीं त करजा खातिर कहीं जाये के जरुरत नइखे पड़त। पियसला के पासे इनार खुदे चलि के आ जाता। धन्न भाग बा हमनी के ए साहेब, चौपाल लगा के, भाषणा पिया के कर्जा बैंक बाँटता। एक गिलास पानी पियला से भला सरिता के नीर घटी। खैरात अमेरिकियो बैंक बटले रहले स कि बिला गइले स।

साँच पूछीं त अब अस्पतालन में धक्का-धुक्की खाये के जरुरत नइखे। सभा बिटोरि के बेरामी के जांच होता।

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

दवाइयो मुफ्ते में मिलता। बहुत सामाजिक संस्था कम्बल बांटत बाड़ी स। साड़ी बँटला के कवनो ओरि-छोरि नइखे। आम जन के जुड़वावत बाड़ी स। लोक अदालत में मोकदिमा के फैसला जुरुते हो जाता। फेरू त आन्हर रेवड़ी बाँटत होखे त अँखिगर बेहाथ कइसे रही।

हे नया बरिस, तूं जब अइहऽ त कनिया बनि के जनि अइहऽ। कुटिया-पिसिया-बरतन-बासन घर में केंगने होला जानि-बूझि के अइहऽ। जानी कि ओनइस सौ सत्तर में एक सौ बीस रूपया मास्टरन के तनखाह रहे, त मंहगाई खातिर केहू का रोवाई ना आवत रहे। आजु बीस हजार तनखाह पवला के बादो मँहगाई के मारि से सब किकुरल बा।

आजु के जमाना में सौ किलो के वजन उठवला पर सोने के तगमा के साथे लाखों रूपया मिलता। ई सोचि के हम चिहा जात बानी कि ओ जमाना में भीम के पासे केतना बल रहे, जे खेलवना कि तरे हाथी के नचा के ओह पार फेंकि देत रहले। अब त विज्ञान एतना आगे बढ़ि गइल बा कि जीन थैरेपी से अइसन लड़िका जब चाहीं पैदा कइल जा सकेला। अब बुझाता कि ओह जमाना कुन्ती के सूर्य-पुत्र कर्ण कइसे भइल होखिहें।

हिन्दुस्तान से पाकिस्तान आ पाकिस्तान से बंगला देश, पंजाब से हरियाणा, उत्तर प्रदेश से उत्तरांचल आ बिहार से झारखंड बनल रहे। दोहरउवा अब उत्तर प्रदेश के बांटे क तइयारी बा। फेरू त कुछ अउरी जाना के टिप्पन के दोष मेटी आ उ मुख्यमंत्री बनि जइहें। आपन डफली आपन राग, तब सीमा रस्ता आ नदी-जल के बँटवारा खातिर राजनीति के रोटी सेकल जाई। जय हो नया बरिस, एह मुद्दा पर आपन कवनो साफ विचार ले के अइहऽ। कम से कम राज ठाकरे आ बाल ठाकरे के मुँह पर ताला लगइहऽ।

जय हो नया बरिस, राउर जय हो। बारम्बार राउर स्वागत कइला से हमरा बहुते शान्ती मिलता, काहे से की हम जानत बानी कि दुख आदमी के मजबूत बनावेला। सोना तपेला त चमकेला। रउरा जेतना बाढ़ि, सूखा, मँहगाई देइब, हम हर हाल में सहब। जइंसे रउरा कहब, ठीक ओइसहीं करब। केतनो उथल-पुथल मचावे वाला भुईंडोल आई, जवालामुखी फाटी भा समुन्दर के पानी पचासो मीटर ऊपर उछरी, जवन सांसद ना क पवले, रउरा जरूर करबि। काहे से कि सुप्रीम कोर्ट ना रहित त जनहित में कवनो कामे ना होखित। साठि बरिस में जवन नेता लोगन के ना लउकल, ओके कोर्ट कचहरी देखवलसि। अस्पतालन के चउबीस घन्टा बिजली देबे के बेवस्था कइलसि।

रउरा आवे के पहिलहीं विज्ञान दे देले बा कि किसानन खातिर कवनो दिकदारी नइखे। काहे से कि अब बाढ़ि, सूखो में फसल लहलहाई। ना रोग लागी ना कीड़ा। सज्जी किसान खुशहाल हो जइहें। ना रही कवनो पीरा।

रउरा धरती पर पैर राखे के पहिलहीं हमनी का एतना मजबूत हो गइल बानी जा कि सइयो रूपया चाउर बिकाई त कवनो बाति नइखे। बस रउरा खाली एतने करबि कि सभका थगली में पाँच सौ के नोट धइल रहेके चाहीं। केहू के हौसला ना होई घाही।

शेर-बाघ-हिरन के छाल के एतना बेवपार बढ़ि गइल कि जंगल के जानवरन के सांसत आ गइल बा कि ऊ कें गने जीहें। काहें से कि केहू के चिंता नइखे। ओही तरे अब शहरन में अतिक्रमण हटाओ अभियान शुरू हो गइल बा। रउरा आइब त शहरन के गाँव से जोड़ि देइब। फसल से लहलहात खेतन में पांच-दस मंजिला मकान बोइ देइब। खेत-खेत रोजे प्लाट बिकाता आ नेंइ खोनाता। ईहे नू तरक्की हऽ।

अब उमेदवार आपन प्रचार नइखे करत, वोट किनाता। जब डाक्टर, डाक्टरे से बिआह करी त कहीं ना कहीं कवनो उरेब होई। हो सकेला आवे वाला जमाना में गिद्धन की तरे कवनो नीयम कानून टूटि जाव। काहें से कि लड़िकियों अपना पसन्द के दुलहा कीने बजार में निकल गइल बाड़ी। रउरा आइब त रीति-रिवाज के धो देइब। इतिहास बतावेला कि कवनो राजा रहले जवन चाम के सिक्का चलवले रहले।

हमरा सुबहा होता कि रउरा आइब त मशीन से काम करा के नरेगा में बेरोजगरिहन के छुट्टी करा देइब। का सरकारी पइसा में रउरो कमीशन लेइब एक से एक साध ु संत महात्मा प्रवचन पिआवत बाड़े, तब्बो क्रिकेट, सिनेमा, राजनीति से बढ़ि के कुछ हइये नइखे। खुशहाली में कवनो पइये नइखे। सोचे के बाति बा राजनीतिज्ञन खातिर, पढुवन खातिर आमजन खातिर एमएलसी बाड़े। दोकानदार खेतिहरन

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

के केहु पुछवइया नइखे। हे नया बरिस रउरा आइब त एह लोगन खातिर कवनो ना कवनो एमएलसी के बेवस्था क देइब। कुछ अइसन नियम क देइब कि हर बरग आ जात के आपन नेता आ अफसर होखे।

●●●

शिवजी के वियाह

बृजमोहन प्रसाद 'अनारी'

दुलहा ना हवे, हवे जुलुम के घाड़ा,
हमार सखियाऽ
चलऽ भागऽ लोग आड़ा!....

करिया कलूट जइसे सावन के घाटा
सगरे कपार पर, मोटे-मोटे जाटा,
मुँहवा के दाँत मये भइल कबाड़ा।

फेंकरता सियराऽ, नाचते सियरिनिया,
कमर हिलावे चुरइलि सवखिनियाऽ,
भूतवाऽ, मलेछवाऽ बजावेले नगाड़ा ऽ !...

गरवा में नाग, बहिंयों में नगीनिया,
असी बरीस के बुझाले पुरनिया,
बिखिधर करइत के, बनवल बाड़े डाँड़ा !....

भूखत रहली हऽ, कई बरीस से
पड़ि गइली पाला, दुलहा चार सौ बीस से,
दसे दिन पहिले उतरइली ह बाड़ा !....

●●●

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

कविता

नया कौनो ठौर देखे के पड़ी

❑ अशोक द्विवेदी

रामजी के चिरई
रामजी के खेत
तब्बो न भरल इहाँ
चिरई के पेट

पेट त पेट रहे
रहलो के दुश्वारी!
जहाँ सोचसु, 'घर बनाईं'
उहे फेंड़वा कटे लागे।
आज का जमाना में ई रहे बहुत छोट बात
बाकि छोट पाँखि क छोट औकात.....
बहुत धवली बहुत धुपली
चोंच से चिंता उकेरली
कहीं फूटल टीन बाजल
कहीं इंकटी, कहीं ढेला
का कहसु, केसे कहसु ?
केहू कहल, 'फरियाद ले जा तूँ-
जिला के कलक्टर के पास,
ऊहे कर सकेला कुछ!
हार-थकि के उहाँ गइली
हॉफि के पैमाल
तब्बो जान भर, चिचियाई कहली; आपबीतल
कूल्हि दुख, कुल्हि बिथा!
अब बसलको के हेंतरे, हइसे उजारल
न्याय ना हऽ!
उहो अइसनका समय में,
जब अबरकन के बसावल जात होखे।
गरीबन के घर बनावल जात होखे।"

रहे हाकिम नंबरी खुर्राट
तनिको कान ना दिहलस।
बुझाइल, उनके कि जइसे सुनि के भी ऊ
अनसुना कइलस
बिचारी का करसु ?
कहीं केहू, कहीं केहू
रहे आवत-जात
खासमखावस सब....
पालिस लगावत,
आम केहू ना रहे।
अर्दली के, बड़े बाबू के सलामी
हाय रे केतना गुलामी ?
का सिपाही, का दरोगा
डिप्टियन के झुंड केतना
पहुँच वाला जासु भीतर
बेपहुँच के, के सुने ?

गुनावन में आजु चिरई, करें का फरियाद आपन?
फिकिर में छिछियात रहली
तले सर-सर-सर उड़ावत धूर
कवनो कार आइल
जोर से हारन सुनाइल
अर्दली तकलस, धवरि के कान में
कहलस दुसरका के.....तिसरका
चउथका के...फेर गइल भीतर
तब कहीं, बहरा निकलले कलक्टर

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

कार से उतरल
पहिरले साफ उज्जर रेशमी कुर्ता-पजामा
ओकरा पाछे दूइ गो हथियार वाला
देखि के कहले कलक्टर,
''अनेरे अइलीं इहाँ सरकार
सगरे काम लगभग हो चलल बा
उहें आफिस बनी रउरा पारटी के!
बस बिहाने तक रुकीं,
''ऊ पार्क'' पूरा साफ होई
फेंड़ बस एगो बचल
उहो कटि जाई!''

'चिरई रामजी के', भकू
कठया मारि दिहलस
चोंच दूनों सट गइल !
मन में बिचरली,
व्यर्थ बा फरियाद इहवाँ
जिये खातिर अब
घड़ी भा दू घड़ी में
नया कौनो ठौर
देखे के पड़ी उनके
एह शहर से दूर
जहवाँ लोग
आवत-जात ना होखे
भले सुनसान होखे।

●●●

बीतल बातन के सुधि

❑ **विजय राज श्रीवास्तव**

बीतल बातन के सुधि में
रहि–रहि के खो जाला मन।

ऊ सुधर बगइचा बचपन
ऊ सुधर गाँव जस यौवन।
लड़िकाईं वाला रगरा,
ऊ बेमतलब के झगरा
भागा–दडड़ी के खेला
हुड़दंग, हँसी के रेला
फिर चढ़त उमिरि के आन्ही
ना तन रहि जाला ऊ तन
ना मन रहि जाला ऊ मन।

कुछ चिन्ता–फिकिर पढ़ाई
कुछ फिसलन अउर चढ़ाई
रोजी–रोटी के सरगम
जिनिगी के कठिन लड़ाई
फिर कदम–कदम पर उलझन
समझौता अउरी अनबन।
ऊ बचपन कहाँ भुलाला
यौवन जब तब अन्हुवाला
कुछ कहनी कुछ अनकहनी
दुख–सुख के कथा बिनाला
का कहल जाव, जिनिगी के
ठहराव रहे या भटकन ।
रिश्तन के नाजुक बन्धन।।

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

नक्सली समस्या पर जरत-बरत सवालन से सामना

तर्क-कुतर्क आ अगर-मगर के समय बीति गइल

❑ शिलीमुख

आड़ में छिप के, अनचीन्ह जगह पर घात लगा के कइल जा रहल, सामूहिक हत्या , अपहरण, लूट आ बारूदी सुरंग विस्फोट से सिवाय हैवानियत, घृणा आ प्रतिशोध के अउर दोसर कुछ नइखे मिले वाला। बाकिर माओवादी नक्सली लगातार इहे कर रहल बाड़न स। हक से वंचित, शोषित गरीब अशिक्षित आ सोझबक लोगन के न्याय आ अधिकार दियावे क ई तरीका कवनो तरह से सराहल ना जा सके जवना में निर्दोष लोगन क बलि चढ़ावल जाव। आ ओह क्षेत्र के विकास के साधन नष्ट क दिहल जाव। जवना में इस्कूल, प्राथमिक स्वास्थ केन्द्र, कम्यूनिटी हाल, स्टेशन आ पुल उड़ावल जाय। रेंल पटरी उखावल, स्टेशन फूंकल आ संचार के साधन तहस नहस कइल; ओह क्षेत्र का लोगन के बाहरी दुनिया से काटे के उपाय कइल माओवादी नक्सलियन के एगो दुसरे चेहरा देखा रहल बा।

कवनो अवैध गोलबंदी, अवैध सत्ता आ हिंसक गिरोह के ई इजाजत ना दिया सके कि ऊ अपना खूनी खेल आ आतंकी हिंसा का जरिये आपन अराजक सत्ता कायम करो। खून-खराबा, अपहरण, हिंसा आ निर्दोष लोगन का कत्लेआम से कवनो समस्या ना सुलझेले। कुछ बुद्धिजीवी आ 'प्रोग्रेसिव' कहाये वाला लोग अपना शब्द-कौतुक आ भाषिक बाजीगरी का जरिये, सुहानभूति के रंगल चदरा ओढ़ाइ के एह तथ्य के अइसे पेश करेलन जइसे ई जायज आन्दोलन के जायज तरीका वाला खून खराबा होखे। भारतीय समाज आ पुरान लोकतंत्र में अगर अइसने अमानवी आजादी आ अराजकता वाला हिंसक रिश्ता बनावे आ बढ़ावे के बा त फेर केहू ना बाँची। ऊहो लोग ना, जेवन लोग अपना भाषिक बाजीगरी से अइसना कुकृत्यन के परोक्ष रूप से वकालत करत बा।

निसंदेह जर-जमीन, नदी, पहाड़, जंगल आ पानी पर सबकर हक बा आ सबके जिये के, आगा बढ़े के राह आ सुविधा-सहारा मिले के चाहीं। सरकार आ पूरा समाजिक व्यवस्था के एकरा खातिर ईमानदार कोशिश करे के चाही; बाकिर 'गलत' आ भर्त्सना जोग कृत्य के निन्दा आ विरोधो होखे के चाही। मानवाधिकार सबका खातिर एके होखे के चाही। नक्सल एरिया वाला क्षेत्रन में, आजादी का बासठ बरिस बितलो पर, काहें आज ले कवनो तेज विकास आ नियंत्रण-व्यवस्था ना कायम हो सकल ? काहे कुछ सुविधा संपन्न, अपराधी आ राजनीतिक ताकत राखे वाला आ धन बल-बाहुबल वाला लोगन के, एह क्षेत्रन का संपदा के लूट आ दोहन खातिर खुला छोड़ल गइल? अशिक्षित, अविकसित आ आधुनिकता का पहुँच से दूर एह क्षेत्र में, काहे अइसने तंत्र आ गँठजोड़ के सरकारी संरक्षण आ असिरबाद मिलत रहल? आ माओवादी नक्सली काहें एह अवैध 'गंठजोड़' आ लूट-तंत्र के सीधा विरोध ना कइलन स? एह सब के जबाब इहे बा कि इहाँ " तूहूँ खुश आ हमहूँ खुश" वाला फार्मूला पर "जिय Sआ जिये द S" वाली रणनीति चल रहल बा। आखिर समानांतर सत्ता चलावे खातिर पइसा, हथियार आ संसाधन चाही नू?

सब जानत बा कि झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, आंध्रा आ उड़ीसा के जवन उपद्रवी आ अशांत इलाका बाड़न स S ओइजा प्राकृतिक आ खनिज संपदा के दूहे

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

आ हथियावे क होड़ मचल बा। विकास का नाँव पर होखत कामन में लोकल उधोगपति, राजनेता, माफिया आ बहुराष्ट्री कंपनियन के मिलल जुलत तंत्र बा। ठीक अइसहीं माओवादी नक्सली अभियान में, सब आदर्शवादी क्रंतिकारिये नइखन स। उन्हनियों में हिंसक क्रूर आ आतंकी मनोवृत्ति वालन के बोलबाला आ वर्चस्व बा, जेवन दुसरा तंत्र का ठीकेदारन इंजीनियरन से टैक्स,रंगदारी आ संसाधन वसूलन बाड़न सऽ। मध ु कोड़ा, रेड्डी भाइयन आ सौरेन, मंडल खातिर ई नक्सली माओवादी कबो बरियार चुनौती आ कपरबत्थी ना बनलन स ऽ। इहो लोग पनपल आ नक्सलियो पनपलन स ऽ।

आज समाजिक आ आंतरिक सुरक्षा का नाँव पर जेंतरे सरकारी आदेश आ हुकुम पर, अपरिचित अनचीन्ह जंगलन में जाये वाला सुरक्षाकर्मियन आ सुरक्षाबल का, जवानन के जइसे बर्बर हत्या आ संहार हो रहल बा, ओह बेचारन का मानवाधिकार पर 'प्रोग्रेसिव' लोगन क बकारे नइखे फूटत। एह क्षेत्र में रेल से सफर करे वाला आमजन के मुसीबत आ मानवाधिकार के ध ज्जी उड़त रहता ऽ। इस्कूल, स्टेशन, प्राथमिक स्वास्थ केन्द्र आ संचार कार्मियन क कवनो मानवाधिकार बा कि ना, एप्पर मुँह में ताला लाग जाता।

अब समय ढेर गुजर चुकल बा। सरकार चाहे केन्द्र क होखे भा राज के, ओके एह समस्या से निपटे खातिर ठोस रणनीति बनावे के पड़ी। वोट आ दलगत हानिलाभ क चिन्ता छोड़ि के अराजकता के माहौल खतम करे खातिर, करेजा कड़ेर क के कदम उठावे के पड़ी। साथे साथ अइसनका क्षेत्रन में इमानदारी, निष्ठा आ संकल्प शक्ति से विकास के आन्ही चलावे के पड़ी। आ उहाँका लोगन से सीधा संवाद बनावे क हरसंभव प्रयास का साथ -साथ आतंक आ हिंसा में हिस्सा लेबे वाली मनोवृत्ति के सफाया करे के पड़ी। दन्तेवाड़ा जइसन कुकृत्य करे वालन के कवनो तरह के रियायती सुविध ा दिहल भारतीय लोकतंत्र खातिर अब बहुते खतरनाक साबित होई।

तर्क-कुतर्क आ अगर-मगर वाला ढुलमुल रवैया, भारत का एह पिछड़ल आ अविकसित क्षेत्रन के, कबो भारत के मजबूत आ लाभकारी हिस्सा ना बने दी। दुनिया के मिसाल वाला लोकतंत्र बने खातिर, मिसाल देबे लायक काम आ कार्यवाही कइ के देखावे के समय अब दूसर ना आई। 'जंगलराज' आ बर्बर अराजकता चाहे जवना क्षेत्र में होखो; अशिक्षा, संवादहीनता, शोषण आ अन्याय जहवां भी होखों; ओके खतम कइला बिना भारत आ ओकर लोकतंत्र कबो मिसाल ना बन पाई।

●●●

टूटत 'परिवार' : छीजत संबन्ध

❑ सान्त्वना

तेज विकास के आपाधापी आ 'रेस' में, मानवी मूल्यन के खियाइल आ लोप भइल लगातार जारी बा आ अब केन्द्रीकृत घर-परिवार खतरा बाड़न स। माने अब जवन हालत बन रहल बा, ओमे 'परिवार'नॉव क मजबूत समाजिक इकाई टूट रहल बा। इहाँ, हमनी का समाज में परिवारे अइसन एगो संस्था रहे, जहाँ, आदमी के आड़-छाँह आ सुरक्षा मिले, परिवार के सबसे गइलो- बीतल के सहारा मिल जाव। संयुक्त भा साझा- परिवारन क जुग त पहिलहीं बीति गइल रहे, अब छोटको परिवार अपना अस्तित्व क लड़ाई लड़ रहल बाड़न स।

बहुत पहिले जब अदिमी अकेल आ खानाब दोस रहे, तब न त आपुसी संबन्ध रहे आ ना सामूहिक चिन्ता रहे, न परिवार आ समाज क कवनों खास ढाँचा रहे-राज आ राष्ट्र के त बतिये छोड़ीं। आदिमी हिंसक, अराजक आ बहुत कुछ 'निज' में सीमित रहे,एक दम आजाद, बिना बन्धन, बे लगाव क, बे लगाम जानवर से बहुत कुछ मिलत-जुलत। लगाव, मोह, प्रेम आ जरूरत ओके एक दुसरा का करीब ले आइल, लोग संगे रहे लागल। हालांकि एक साथ एगो परिवार बना के रहला में निजी आजादी आ निरंकुशता के सीमा घटल, ओघरी के बड़-विवेकी लोगन के, आदमी के ढंग से चलावे खातिर परिवार, कुनबा, आ समाज के खाका तइयार करेके पड़ल।

परिवार के मूल उदेश्य एगो अइसन 'प्रक्रिया'- 'प्रणाली' रहे, जवना में निजी हित सामूहिक हित में विलोप हो जात रहे। बाद में परिवारिक हित निजी हित में बन जात रहे। एह प्रक्रिया में प्रेम लगाव आ संवेदना उर्जा आ पुल क काम करत रहे। मानव सभ्यता के विकास का चलते, आगा परिवारो क रूप रेखा बदले लागल आ 'निजी हित' 'सामूहिक हित' पर हावी होखे लागल। प्रेम लगाव क जगह 'उपयेगिता' आ 'फायदा' ले लिहलस आ संवेदना के जगह काइंयापन, चल्हांकी आ औपचारिकता ले लिहलस। असुरक्षा आ ' पलायन' क दबाव ऊपर से। नतीजा में परिवार टूटे लागल। भारी भरकम कुनबा टूटि के केन्द्रीकृत परिवार बन गइलन स।

भारत के परिवार में अंदरूनी-लोकतंत्र त कवनो खास पहिलहूँ ना रहे, हँऽ सामूहिक हित- चिंता में छुटटापन आ आजादी पर तनी मनी लगाम लगा के, समानता के जरूर सकारल जात रहे। परिवार के मुखिया परिवार के हर सदस्य के खयाल रखे आ काम क बँटवारा भरसक समान होत रहे। बाकिर समानता के भाव में लगातार होत कमी का कारन परिवार में मिलत भाईचारा आ सहन शीलता के हवा निकल गइल। अब परिवार में ऊहे सदस्य बेसी अहमियत आ स्थान पावेला, जे कमासुत भा शारीरिक आर्थिक रूप से ज्यादा मजबूत आ प्रभाव वाला बा। भा ऊ कवनों न कवनों रूप में परिवार के विकास क धुरी बनला क क्षमता रखले बा।

पहिले परिवार के आजीविका के साधन जोतभूमि आ कृषि रहे। भले ऊ ढेर ना रहें, बाकिर परिवार के जिए-खाये भर इन्तजाम हो जात रहे। परिवार टूटे शुरू भइल त ओकरा पहिला विखंडन क शिकार 'जोत भूमि' (खेत-बारी) क बँटवारा भइल आ ओकरा कारन उत्पादन आ उपज क मूल सोत कमजोर हो गइल। टुकड़ा टुकड़ा बँटाइल खेत में खेती से जिनिगी चले वाला ना रहल त लोग उद्यम व्यवसाय आ नोकरी - पेशा से जुड़े लागल ।

आदमी के मेहनत, श्रम आ कइला- धइला के कीमत खेतिहर गँवई 'परिवारन' में ओतना ना मनाइल, जतना होखे चाहत रहे। जइसे गाँव में अगर कवनों खेती बारी करे वाला रहे त हाड़ तोड़ मेहनत कइ के, अपना सुख-सुविधा कपड़ा लत्ता क परवाह ना क के अपना छोट भाइयन के पढ़वलस आ इज्जत आबरू सँभरलस। भाई नोकरी करे लगलन स भा रोजिगार क के रूपया पइसा वाला हो गइलन स आ एह लायक हो गइलन स कि आपन परिवार मेहरारू-लइका के खूब बढ़िया से भरन पोषण आ

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

विकास कर सकँ स। एकरा बावजूद जब पैतृक संपत्ति आ जोत भूमि के बँटाए क नउबत आइल, त हक हिस्सा ले लिहलन स, खेती-बारी में अक्षम रहलो पर गाँव में रहि के खेती करें वाला खातिर त्याग के भावना उन्हनी में ना आइल , ऐसे आपुसी संबंध आ लगाव में बार बार खरोंच लागल आ दूरी बढ़ल।

एही तरह से एगो, अउर उदाहरण लिहल जा सकेला। परिवार में मेहरारू (स्त्री) बहुत अधिक मानवी-श्रम आ मेहनत कइयो के उपेक्षित आ प्रताड़ित कइल गइली स। उनहन के मेहनत के ऊ कीमत ना लगावल गइल, जवन मर्द के मिलत रहल । कुछ परिवार में ऊ छरदेवाली का भीतर, बन्दिश में रहे खातिर मजबूर बाड़ी स। आधुनिकता क असर वाला परिवार में स्त्री क स्थिति अउर विकट बा। अइसन परिवार में लड़की सुन्दर सुशील, शिक्षित, चाही बाकिर शर्त ई रही कि ऊ परंपरा से बन्हाइल रहो। ऊ नौकरी भले करो बाकिर पाँच बजे तक घरे जरूर लौट आवो। लइकी खुला विचार वाला होखो बाकिर घर का मामला में तर्क वितर्क मत करो। कवनो मामला में औरत आपन स्वतंत्र निर्णय ना ले सकेले। अगर ऊ अइसन क दिहलस फेर संबंध में तनाव आ परिवार में विघटन क बीया रोपा जाई। अइसने विरोधाभासी स्थिति में साइत कैकेयी राजा दशरथ से कहले रहली- ''हे राजा, एक संगे दुनो काम ना हो सके कि ठठा के हँसबो कर S आ मुहों फुलवले रहS।''

आज का जुग में, जहाँ रूपया आ समृद्धि सफलता के निर्धारित करत बा, जहाँ सफलता- भौतिक संपन्नता आ ''सोशल स्टेटस'' से आंकल जात बिया उहाँ एही कुल्हि के पावे खातिर परिवार में होड़ आ ईर्ष्या जनम लेत बिया।

''कबिरा वो धन संचिये, जो आगे का होय
सीस चढ़ाई गंठरी, जात न देखा कोय।'' के मरम कहाँ समझल जाता? लोग अपना वर्तमान के बनावे खातिर पारिवारिक रिश्तन के व्यवसायिक दुरूपयोग कइला से नइखे चूकत। अइसन धन कवना मसरफ के, जवना का कारन परिवार बिखर जाव आ आपुसी संबंध में दरार पड़ जाव। मार्क्स के कहल, कि समृद्धि अधिका (एक्स्ट्रा) मूल्य हड़पला से आवेले। के दूसर पक्ष साइत मानवीय दोहन से रहे। अइसनका संपन्न आ समृद्ध लोग बस 'बजार' के देखेला आ बजार क सुनेला। ई देखल आ सुनल उनका खातिर परिवरिक रिश्ता 'बस्तु' हो जाला। माने जवन रिश्ता जेतना ढेर फायदा भा लाभ पहुँचावे, ओकर अउर दोहन करे से ना चूके के चाहीं।

दरसल अइसन आधुनिक परिवार, रिश्तन के पवित्रता आ नैतिकता से बहुत पहिलहीं आपन नाता तूर चुकल बाड़न स, अब भावना के, सफलता के बजार में भुनावे खातिर, इमोशनल, सहारा लेत बाड़न स। अइसन समृद्धि आदमी का भीतर लालच, काइयांपन आ अभिमान के बढ़ावा देले। बाबा तुलसी कहले कि'' प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं, फेर ई त माड़र्न बड़कवा लोग ह S। अइसन लोगन का घर में भितरघात, ईर्ष्या आ कूटनीतिक दाँव-पेंच चलबे करी। उहाँ भाई आ बहिन खातिर भाई ना रही, बाप महतारी खातिर बेटा ना रही, मेहरारू खातिर आदर्श पति ना रही, त भला चाचा-चाची आ चचेरा भाई बहिन क रिश्ता ऊ कइसे निभाई? निदा फाजली आज के समय के विडंबना के रेघरियावत शेर कहले रहलन -

''यहाँ किसी को कोई रास्ता नहीं देता
मुझे गिरा के अगर खुद सँभल सको, तो चलो।''

आज के जुग प्रतिद्न्दिता, आ 'रेस' में आगा अउर आगा जाए के प्रवृत्ति, नैतिक मूल्यन के बहुत भाव ना देले। अगर भाव देबे लागी त ओकर सफलता सीमित हो जाई आ ऊ दउड़ में पछुवा जाई, या हाशिया पर ढकेल दिहल जाई। बाजार के संस्कृति आ 'माल कल्चर' का नया समय में बउराइल लोग भुला गइल बा कि ऊ लोग जाने अनजाने 'आदर्श' के जूता बना के पहिन रहल बा आ 'बेहयाई' के टोपी। मूल्य, नैतिकता आ मानवता खाली अर्थ हीन शब्द बनल जात बा। नैतिक मूल्यन के लगातार होत क्षय में परिवार टूट रहल बाड़न सS आ रिश्ता आपन लगाव आ गरमाहट खो रहल बाड़न स। हालांकि हमन का गँवई आ कस्बाई क्षेत्र में घर- परिवार अपना अस्तित्व खातिर अबहियों जूझ रहल बाड़न सS। आगा आवे वाला वक्त में 'परिवार' नाँव का संस्था के भविष्य बहुत कुछ एह बात पर निर्भर करी कि ओकर कमान

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

कइसन लोगन का हाथ में बा। अइसना लोग के हाथ में, जे 'सफलता' खातिर भा निजी स्वारथ में व्यवसायिकता के थपेड़ा खात, आसानी से नैतिक मूल्य आ मानवीयता के ठोकर मार सकेंला कि अइसना लोग का हाथ में, जे युग के कड़ुवा जथारथ आ विकास के विविध समस्या से टकरात भिड़त, बड़ा दृढ़ता से अपना भीतर मानवीय मूल्य आ रिश्तन के गर्मी सँजो के रखले बा। ओही गर्मी का बदउलत अपना घर परिवार के ऊ बचा ले जाई।

●●●

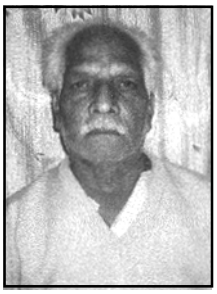

एकही रस्ता कुर्बानी बा ।

❑ शम्भु नाथ उपाध्याय

होश सम्हरलीं तब से अबले, डेगे-डेग हरानी बा
खून पसेना एक क दिहलीं, नाहीं कउड़ी कानी बा।

लूट छिनइती तिकड़मबाजी कइ चचवा रंग काटेला
चमचागीरी से साहब का, काटत देखऽ चानी बा।

ईमाने के ढोवत-ढोवत मूए के दिन आइ गइल
बाबा दादा के बेरिये से मसकलि, झँखत पलानी बा।

केन्द्र क जिम्मा राज्य पर गइल 'महँगाई पर' काबू के
मस्त भइल बा बनिया, नइखे लउकत दालि चुहानी बा।

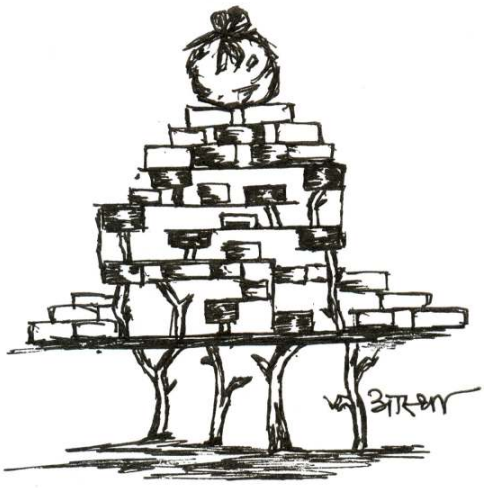

बाहुबली हत्यारन के सम्मान कइल मजबूरी बा
सेवा में तत्पर बा सभ, उन्हने खातिर रजधानी बा।

कुर्सी बदली तंत्र न बदली कोरा भाषणबाजी से
नयी व्यवस्था खातिर बस एकही रस्ता कुर्बानी बा।

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

लघुकथा

जाँच-रिपोर्ट

❑ **विनोद द्विवेदी**

रात ढेर बीत चुकल रहे बाकि विधायक जी का आँखिन से नीन गायब रहे। उनका आ एगो 'संवासिनी' के जायज-नजायज संबंध के लेके बात एतना आगा बढ़ चुकल रहे कि बिधायक जी के इस्तीफो से खतम होखे वाला ना लउकत रहे। जीउ हदसल जात रहे आ रहि रहि के हवालाते लउकत रहे। विधायक जी सबेर क इन्तजार ना कइ सकलन आ बेचैन होके मंत्री जी से ओही बेरा मिले खातिर उनका रेजीडेन्स पर चल दिहलन।

एहर ओहर क औपचारिक बात-बतकही का बाद मंत्री जी; विधायक जी के जाँच रिपोर्ट वाली फाइल अपना दराज से निकल के मेज पर धरत, बोललन - "अरे बिधायक जी, ई ससुरा अखबार वाला त हाथ धोइ के तोहरा पाछा परले रहले हा स, बाकि हई जांच रिपोटवो तहरा खिलाफे आइल बा।" मन्त्री जी अपना झुँझलाहट में कुछ चिन्ता ढोवत आगा कहलन, 'आज त हद्दे हो गइल, विरोधी पारटी के बिधायको तहरा के लेके अतना हल्लागुल्ला आ बवाल शुरू क दिहुवन स, कि दिमाग खराब हो गउवे, ऊ त अध्यक्ष जी सम्हार लिहुवन आ सदन क कार्यवाही दोसरा दिन खातिर रोक दिहुवन। अब तूँ ही बतावऽ विधायक जी, कि काल्ह का कइल जाई ? हमार सरकार ओइसहीं अल्पमत के बिया।' मंत्री जी आपन दूनों आँखि बिधायक प गड़का दिहुवन।

विधायक जी का आँख से आँसू बहे लागल, ऊ दूनो हाथ जोड़त बोललन, "हम बड़ा उमेद लेके आइल बानीं, हमार इज्जत अब रउवे हाथ में बा, जौन चाहीं करीं। रउरे कुछ करे के बा!"

विधायक जी के रोवाइन मुँह आ हाथ जोड़ल देखि के मंत्री जी गंभीर हो गइलन। विधायक का हैसियत आ औकात से ऊ खूब परिचित रहलन। उनका पता रहे कि ई सरकार बचावे खातिर दू गो अउर विधायक कहीं से तूर सकेला। ऊ गर साफ करत, गम्हीरे भाव में कहलन, "घबड़ा मत भाई, हम कवनो न कवनो गुणा-गणित क के तोहके बँचावे के कोसिस करब, बाकिर तहरो एगो काम पहिले करे के पड़ी।"

-" ऊ का ? रउवा हुकुम करीं !" विधायक जी एहसान से दबाइल कहलन।

- "अगिला हफ्ता में हमके राज्यपाल महोदय किहाँ बहुमत सिद्ध करे के बा ! तोहके तीन गो विधायक हमरा पक्ष में, कइसहूँ करहीं के पड़ी। एकर जिमवारी तोहरे पर बा।" मंत्री जी, बिधायक के चेहरा पर चढ़त उतरत भाव पढ़त कहलन - 'एक बेर सरकार बच जाव, बस, एकरा बाद अइसन कतने संवासिनी खप जइहन स आ तोहार जांच रिपोट त कूड़ादान में जइबे करी। बाकिर ई कूल्हि तोहरे पर बा विधायक जी। अब जा, आ तनिको चिन्ता जिन करऽ ! हँ, हई काम जरूर हो जाए के चाहीं।'

बिधायक जी के तसल्ली मिलल। ऊ हाथ जोरि के उठ गइलन। उनका पाछा घुमते मंत्री जी का ओठन पर एगो कुटिल मुस्कान उभरि आइल।

●●●

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

कहानी

धरम बदलउअल के मानस

❑ आनंद संधिदूत

ओह दिन उर्मिला जानबूझ के अपना बाप जोखन का सामने आपन प्रेम-व्यापार देखवली। आखिर एम०ए०, बी०एड्० लइकी के एतना अधिकार त देबहीं के पड़ी कि ऊ अपना मनमाफिक जीवनसाथी के चुनाव कर सको। जीवनोसाथी कवनो हिनहिन-भिनभिन ना- जोखन राम नट ! एम०ए० बी०एड०, प्रायमरी स्कूल का मास्टरी का प्रतीक्षा सूची में ! अपना छात्र जीवन से उत्तर प्रदेश के एगो नामी अथलीट। पूर्वांचल से लेके उत्तरांचल तक का केतने पहलवानन के धूर चटाके दर्जनभर चाँदी के तगमा आ गदका से पुरस्कारल। पक्का बान के दोहरा बदन, लम्बाई पाँच फीट नव ईंच, घुंघरार बार, मुँह से बोली निकालेले त लागेला कवनो सरस्वती-पुत्र का मुँह से हरसिंगार के फूल झरत हो। जोखन के परिवारिको माहौल खराब ना रहे।

जोखन के बाप मल्ल विद्या के उस्ताद रहलन। जाड़ा का दिन में इनकर परिवार कवनो गाँव में चल जाय। ओहिजा बड़-बड़ुआ का दुआर पर सलाम-दुआ का बाद आपन बाँहि ठोंक के पहलवान भइला के परिचय दिहल जाय। एह परिचय का बाद जोखन का बाप के पूरा गाँव हाथोंहाथ ले ले। गाँव का कवनो बगइचा में मड़ई पड़ जाय जवना में जोखन का माई के रहे के इन्तजाम हो जाय आ जोखन के बाबू बगइचा का कवनो मोनासिब जगह पर अखाड़ा खोनसु आ ओहिजा गाँव के मल्ल विद्या सीखे के सवखीन बाभन-ठाकुर आ यादव आदि के लइका लोग आवे लागे। ई काम भर जाड़ा चले। तब जोखन छोट रहलन। चार-पाँच साल के। सबेरे जब नंग-धड़ंग जोखन का जाड़ा लागे त उनकर बाबू कहसु कि जा बगइचा के दूबेर दउर के चउकठ लअ, जाड़ा भाग जाई। जोखन के भाई मड़इये में तरह-तरह के पकवान बनावसु। गाँव के चेला लोग जब तब मुर्गो-मछरी दे जाय। जोखन के बाबुओ शिकार के सवखीन रहलन। ऊ धनुष विद्या में सटीक निशानेबाज रहलन। धनुष के डोरी ऊ मुअल घोड़ा का नस के खींच के बनावसु। अइसन कई गो घोड़नस के डोरी जोखन का घरे आजुओ धइल बा। जाड़ा खतम भइला पर जब उस्ताद के विदाई होखे त गुरु दक्षिणा से बैलगाड़ी भर जाय। गुरु दक्षिणा में नेटुआ-नेटुइन से लेके जोखन तक के पहिरे के नया-पुरान कपड़ा रहल करे। एकरा अलावे बोरा क बोरा चाउर दाल बा गेंहू तेल गूर... कहे के मतलब कि जेकरा जवन रहल करे, उहे जौरा का गल्ला नियर अखाड़ा पर उझिल जाय। ई अन्न आगे का सात-आठ महीना खातिर बहुत रहल करे।

जवना गाँव में जोखन के घर रहे, ओहिजा एक-दू बिगहा जमीन आ एगो भइंस रहे। एकर देखभाल उनकर दादी करसु। ऊ बहुत धार्मिक महिला रहलीं। कवनो माघ क महीना ऊ बिना संगम नहइले ना रहसु। उनका सामान में पीतर के ठाकुर जी आ रुद्राक्ष आ स्फटिक के दूगो माला शरीर का साँस नियर साथ रहल करे। .... एह तरह से उर्मिला एगो संस्कारी परिवार में आपन रिश्ता बनावे चाहत रहली। बस जाति के अन्तर रहे।

उर्मिला के बाप दयाराम विश्वकर्मा पेशा से जूनियर इंजीनियर रहलन। आर्थिक आधार पर जोखन से कवनो जोड़ ना रहे। लेकिन बाकी कुल बराबर रहे। दूनो परिवार व्रात्य रहे। विश्वकर्मों जी गाँव से मध्यम आय वर्ग के रहलन। उनकर बाप जवले जिन्दा रहलन घर का दालान में भाथी गड़ल रहे। गाँव के हर जुआठ हँसुआ-कुदारी बनावल उनकर काम रहे। उनकर धर्म में आस्था गजब के रहे। रोजाना नदी में नहाइ के शंकर जी के जल चढ़ा के आपन काम सुरू करसु। खाए का पहिले भूखा-दूखा के खिआवल उनकर बानि रहे। लेकिन उर्मिला का विवाह में एह "भौतिक गनना-गून" के बइठल दयाराम के कवनो मायने ना राखत रहे। उनके अपना जाति में एगो नीक लइका चाहत रहे। शायद कन्या का हरेक पिता

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

के ई अभिलाषा होला। दयोराम के ई अभिलाषा जोखन-उर्मिला का प्रेम विवाह में खलनायक बन गइल। अब दयाराम, जोखन का सलामो कइला पर ओकर जवाब ना देसु।

कुछ दिन वाद पता चलल कि दयाराम सपरिवार गाँव गइल बाड़न। जवन बिहार का कवनो जिला में रहे। लवटलन त संगे सब रहल; उर्मिला ना रहलीं। पता चलल कि ऊ उर्मिला के बियाह करे गइल रहलन। लइका कवनो बिभाग में क्लर्क रहे। एह वियाह में दयाराम के कुल्हिये जमा पूँजी खर्च हो चुकल रहे।

जोखन का सामने प्रेम-वियाह के मजबूरी रहे। जवना नट जाति में ऊ पैदा भइल रहलन ओहमें नब्बे प्रतिशत नट अब मुसलमान हो गइल बाड़न। खाली दस प्रतिशत नट अब हिन्दू रहि गइल बाड़न। एह दस प्रतिशत में एगो योग्य लइका के योग्य लइकी ढूँढ़ लिहल ओतने कठिन बा, जेतना पउदर का पानी में सोंस-घड़ियाल के मिलल। हिन्दू आ मुसलमान का आर्थिक-सामाजिक विकासो में भारी अन्तर बा। हिन्दू नट अभी आजुओ बानर नचावत, शहद निकालत आ गोदना गोदत कवनो तरह जीयत मिलिहें, जबकि मुसलमान नट पढ़-लिख के नीक-नीक पद पर काम करत बाड़न या हाट-बाजार में आढ़त-गोला के मालिक बाड़न।

जोखन के बिआह बहुत बचपन में एगो हिन्दू नट का लइकी से भइल रहे। जाति-बिरादर का कानून का अनुसार ई बहुत सही रिश्ता रहे। दूनों दल उच्च जाति के लउरिया नट रहे। बिआह में पंडी जी लइका-लइकी के गनना-गुनन बइठवलन बाकिर नाड़ी का गनना-गुन पर ध्यान ना दिआइल। आज समाज में अधिकांश लोग के यौन रोग आ ओकरा बाद के भयंकर शारीरिक क्षति वैवाहिक कारण से हो रहल बा। विवाह का कुछ दिन बाद जोखन का मेहरारू का अनेक ब्याधि से परिवार परिचित भइल। एकर प्रभाव जोखनो पर लउकल। नतीजा घर में झगरा होखे लागल। मेहरारू नइहर गइली त लवटि के न खुद अइली ना लिआवे केहू गइल। हँ, कुछ दिन बाद हरजा-खरचा के नालिस के सम्मन जरूर आइल।

जब जोखन के मेहरारू खरचा के मोकदिमा चलावे वाली रहली ओही घरी हमार परिचय जोखन से भइल। हमरा कमरा में कुछ देर तक औपचारिक बात का बाद जब ऊ अपना पैंट का जेब में हाथ डाल के निकललन त एक जोड़ा चाँदी के पछुआ निकलल। उनकर इच्छा रहे कि हम ओह गहना के बन्धक राख लीं। आ जब उनका पइसा हो जाय त पइसा लेके गहना वापस कइ दीं।.... मोकदिमा क बात चलल त हमके अपना माई याद आइल। एक बेर हमरो घरे मोकदिमा लागल, ओह में हमरा माई के एक पसेरी चानी के गहना औने-पौने बिका गइल रहे। ओही सम्हेरा हमके बादल सिंह के तगमो याद आइल, करीब एक किलो गिलट के तगमा अंगरेजी राज में सन् अट्ठारह सौ सत्तावन का गदर में बागी सिपाहिन के दबावे का एवज में बादल सिंह के मिलल रहे। ओह तगमा का एक ओर मदर ऑफ इंगलैण्ड के तस्वीर आ दूसरा पटा पर विक्टोरिया का तस्वीर का नीचे बादल सिंह के वीरता के गुनगान रहे। ऊ तगमा कसरहट्टी का स्कैप में गलावे खातिर आइल रहे। जोखन राम के कई गो तगमा आ गदका घर का खर्च का जुगाड़ में औने-पौने बिक चुकल रहे। आज महतारी के पछुआ दाँव पर रहे। अदालत में मोकदिमा खड़ा करे खातिर पइसा के जरूरत रहे।

हम किराया का कमरा में सधुआइल भाव के आदमी, गहना बन्धक रखे का स्थिति में ना रहलीं। एह से हम बन्धक रखे से इन्कार करत, जोखन के सलाह दिहलीं कि गहना बेंच दिहल जाव। साधारण पछुआ रहे। ओकर कवनो इतिहास या नायाब नक्कासी आदि ना रहे, जवना का मोह में बेचे का जगहा पर बन्धक राखल जरूरी हो।

शायद जोखन का गहना बेचे या बन्धक रखे के जरूरत ना पड़ल। एह घटना का एकाधे हप्ता बाद जोखन के मेहरारू के देहान्त हो गइल। एहसे मोकदिमा अपने आप उड़स गइल। जोखन का कपार पर से मेहरारू के भूत आ भविष्य दूनो उतर गइल, बाकिर आपन वर्तमान जरूर साथ में रहे। जवन मृत जीवनसाथी का कृपा से पहलवानी लायक ना रहि गइल रहे। पूरा शरीर में दर्द चिल्हकन आ कमजोरी रहे।

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

जोखन के बिआह जरूरी रहे। घर में केहू रोटी सेंके वाला ना रहे। महतारी के देहान्त मेहरारू का मुअला का महीने खौर बाद हो गइल रहे। जोखन, महतारी का हाथ के सेंकल आखिरी रोटी एगो शीशा का । शोकेस में धइके अपना कमरा का ताखा पर ध दिहलन। तब तक जोखन के प्रायमरी में प्रतीक्षारत नोकरियो मिल गइल रहे। तनखाह से मोटर सायकिलो किना गइल। एह से सम्पर्क-परिचय बढ़ल। अपना माई के मृत्यु शय्या किहें बइठल आ महतारी के कपार सुहुरावत जोखन, माई के कहलन कि- "माई हम तोके जिन्दा त ना राख पाइब बाकिर चाहत बानीं कि तोर आँख जिन्दा राखलीं।"

"ऊ कइसे ?" जोखन के माई चकचिहा के पुछली।

"अब मुअला का बाद नेत्रदान हो'ता।" जोखन महतारी के आँख के पलक सुहरावत कइलन।

"अँखिया निकली त दुखाई ना ? जोखन के माई एक बेर फीकी हँसी हँसत कहली।"

"जब परान निकल जाला त साँस हवा में मिल जाला। मांस माटी हो जाला। खून पानी हो जाला। प्रान आकाश में समा जाला। अब रहबे का करी कि दुखाई ! दुख आ दर्द तबे तक बा जब तक ई कुल तत्व बटुराइल बा। पाँचो तत्व जइसे छितराई कि दुख-सुख, हर्ष-विषाद, आक्रमण-बचाव कुल्हिये अलोपित हो जाई।" जोखन दार्शनिक भाव से कहलन।

जोखन के माई तइयार हो गइली। मुअला का बाद उनकर आँख निकाल के आ आँख का खोढ़िला में रुई बगैरह भर के चेहरा सुग्घर बना दिहल गइल। बाहर से देखला पर ना लागत रहे कि आँख निकालल बा।

जोखन का माई के आँख एगो आन्हर नौजवान के लागलि। जोखन का जब माई के बिरह सतावेला त ओही नौजवान किहें घण्टा-खाँड़ बइठ के मन हल्का कइ लेलन। उनके लागेला कि भले महतारी के कोंख- आगी में जरि गइल लेकिन आँख अभी जिन्दा बा जवना से ऊ हमार बचपन अगोरले रहली। आ उनका जियते जी जवना आँख के पुतरी हमनी का रहलीं जा, ऊ आँख के पुतरी अब हमनी के मन्दिर बा, शिवाला बा, मक्का-मदीना आ चारो धाम बा।

जोखन क बाबू जोखन खातिर कनिया खोजत-खोजत आजिज आ गइलन, बाकिर हिन्दू नट में मन माफिक लइकी ना मिलल त नाहिये मिलल। शिक्षा का क्षेत्र में बी०ए०, एम०ए० त छोड़ीं दर्जा दसो फेल लइकी हिन्दू नट में ना लउकलि। एह अभाव से बड़ अभाव गरीबी के रहे। गरीबी में जिन्दगी गुलाम-हो जाले। घर के सवाँग बाहर निकल जाला आ बायली मर्द पान खात मुस्कियात अन्दर आ जालन स। शरीर, शरीर ना रह जाय, होटल के थरिया-गिलास हो जाला। जे आइल खाइल-पीयल आ चल दिहल। जोखन का बाबू के मन हिन्दू नट से भिड़िक गइल।

अब हिन्दुओ नट में मुसलमान नट के लइकी बहुत आवत बाड़ी स। शुरू में हल्ला होला कि ना जानकारी रहले बिआह हो गइल। ना जानकारी से गलती हो गइल। फेर कुछ दिन आवाजाही आ नेवता-हँकारी बन्द रहेला, फेरू सामान्य हो जाला। अलग-अलग धरम भइलो पर नेटुअन में सांस्कृतिआउ त एकता गजब के बा !

शादी-बिआह के चिन्ता जोखन का बजाय जोखन का बाबू का जादा रहे। उनका मन में बिचार के एगो तूफान उठल करे। ले दे के उनकर मन कहे कि अगर सुखमय आ तनावरहित जीवन जीये के बा त मुसलमान भइल जरूरी बा। एहर कुछ महीनन से ऊ पोंछिटा खोंसल बन्द कइ दिहलन। लुंगी पहिन के हाथ में अलमुनिया के बधना ले ले प्रायः ऊ अपना अंगना में लउकसु। जोखन का ई नीक ना लागे। जवना सुन्दर बगइचा के निर्माण उनकर आजी कइले रहली; ऊ बगइचा अब आपन रूप बदलत लउके। आँगन के तुलसी अब झुरा गइल रहली। चउरा अबहियों रहे, लेकिन बिना प्रसंग ! जोखन का डर लागे कि कहियो बाबू के नजर पड़ी आ फेर ई चउरा केतना देर टिकी ? पहलवान का हाथ के खाली एक कुदारी बहुत बा। जोखन का इयाद आइल एही तुलसी का पाछा बगल का मुसलमानिन से हमरा आजी के झगड़ा भइल रहे। तब एह दूनो परिवार का आँगन का बीच एगो डँड़वार के आड़ रहे। डँडवार का ओह पार

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

मुसलमान परिवार आ एह पार जोखन का आजी के तुलसी के चउरा। एक दिन मियाँइन एगो लेवा धोके डँड़वार पर पसार दिहली आ ओकर बूँद-बूँद पानी तुलसी पर गिरे लागल। जोखन के आजी देखली त आग बबूला हो गइली। ऊ मिआँइन के गरिआवत चिचिअइली आ लेवा हटा लेबे के आदेश दिहली। मिआँइन हँसी मजाक का मनस्थिति में रहली। ऊ आन ओर तिकवत कहली कि, "आ का हो गइल दू बूँद पानी तोहरा तुलसी पर टपक गइल त ?"

जोखन के आजी अउर तेज बिगड़त कहली कि, "तें मीयाँ-टीयाँ के जात का जानेऽ कि तुलसी का होत ह ?"

मिआँइन हँसत, लेवा घसका के दूर करत कहली, "सबेरे उठ के एक बकोटा तुलसी नोचबू आ चाह बनइबू आ दिन भर तुलसी के कसीदा पढ़बू।"

आजी के इयाद आइल त जोखन अकेले में हँस दिहलन। ओह घरी जोखन के आमदरफ्त सुरेन्द्र श्रीवास्तव का घर से बढ़ गइल रहे। सुरेन्दर के बहिन सुलोचना उनका साथ के पढ़ल रहली। अब ऊहो प्रतीक्षा सूची वाली प्रायमरी के मास्टरी पा गइल रहली। दूनो जाना के स्कूलों एके नवनि में रहे। जोखन उनके अपना मोटर सायकिल से स्कूल छोड़त अपना स्कूल चल जासु। साँझ के लवटहूँ का बेर इहे काम रहे। एकरा अलावहूँ बहुत कुछ काम सुरेन्दर का परिवार में रहे जवना खातिर जोखन के इन्तजार हो। श्रीवास्तव जी के मोका कहाँ रहे कि लइका के फीस जमा करसु। नीक स्कूल में एडमिशन के सोचसु। बिजली के बिल जमा करसु। गैस के सिलिण्डर ले आवसु चाहे पिपरा डाँड़ के जमीन निकाले खातिर बढ़िया ग्राहक लहावसु। ई कुल काम जोखन का जिम्मे रहल। जोखन का लागल कि सुलोचना उनका निकट आ गइल बाड़ी। एक दिन सुलोचना जब जोखन का पैण्ट का जेब पर हाथ धइले मोटर सायकिल पर चलल जात रहली त शहर का बाहर सरेह का एकान्त में जोखन कवनो तरह साहस जुटावत मुस्कियात कहलन कि, "हम चाहत बानीं कि तोहके हमरा जेब में हाथ डाले के अधिकार मिल जाय आ हमके तोहरा वैनिटी बैग में !"

सुलोचना, जोखन का जेब पर से हाथ हटावत, कान्हीं पर धरत कहलीं कि, "तूं एतना देर से काहे कहलऽह ! हमार बिआह त विनय से तय हो चुकल बा। ऊ सुरियावाँ में एल०टी० ग्रेड में पढ़ावेलन।"

जोखन का लागल कि हाथ से मोटर सायकिल के हैण्डिल छूटत बा लेकिन ऊ सम्हर गइलन।

अगिला दिन सुलोचना बस स्टैण्ड पर खड़ा रहली। जोखन का ओहर ताकहूँ के मन ना कइल। आन का अधिकार के हीरा, सज्जन पुरुष के माटी के ढेला होला।

एहर दू-चार दिन में जोखन का चेहरा पर जवन परिवर्तन होत रहे ऊ चतुर बाप से छिपल ना रहे। जोखन के बाबू जान गइलन कि एह घरी लोहा गरम बा, हथौड़ा मरला पर अपना मनमाफिक मुड़ जाई। ऊ जोखन के बड़ा प्यार से अपना पास बइठवलन आ जौनपुर के नामी अढ़तिया हाजी अब्दुला का बेटी से बिआह के प्रस्ताव रखलन। जोखन स्वीकृति में मूड़ी हिला दिहलन।

नट एगो वीर जाति ह। पूर्वांचल का गाँव-गाँव में नटवीर बाबा के चउरा मिलेला। ऊ मन वचन आ कर्म से एक होला। जोखन के बाबू पहिले आपन धर्म परिवर्तन कइलन फेर लइका के धर्मान्तरण के ओर ले गइलन।

शहर में जोखन एगो यादव का मकान में किरायेदार रहलन। यादव के जब पता चलल कि जोखन मुसलमान हो गइल बाड़न आ मुसलमान में शादी होखे वाली बा, त ऊ मकान खाली करे के आदेश दिहलन। जोखन के कवनो दिक्कत ना भइल। ऊ आपन सामान लेके एगो मुसलमानी टोला का मकान में आ गइलन।

कुछ दिन बाद शादी भइल। शादी में जोखनों के नाँव परिवर्तन भइल। लेकिन हम पूछते रहि गइलीं ऊ आपन मुसलमानी नाँव बतवलन ना। हँ डबडबाइल आँख से कहलन कि जबले जीयब तवले नाँव त आजिये के दिहल चली। उनकर आजी मराछ कोंख से जामल पोता के अनाज से जोख के दान देले रहली आ नाँव रखली जोखन। सरकारी कागज में इहे नाँव बा। एही नाँवे से तनखाह मिलत बा। आ एही नाँव से पिन्सिनो मिली। हँ

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

एह नाँव से चिता ना मिली। अब तकिया मिली ऊ हाजी अब्दुला का आँगन में मिलल नाँव से।

बिआह का बाद एक दिन जोखन आपन मेहरारू लेके हमरा घरे अइलन। जोखन के मेहरारू गजब के खूबसूरत रहे। सौन्दर्य के सम्पन्नता अंग-अंग से झलकत रहे। जोखन राम के हमरा घरे आवे के एगो खास कारन रहे। उनका पास अपना आजी के दूगो धरोहर रहे, जवन धर्मान्तरण का बाद साथ में राखल सम्भव ना रहे। पहिला धरोहर ठाकुर जी के पीतर के मुरती रहे आ दूसर दूगो माला- एगो स्फटिक के आ एगो रुद्राक्ष के।

जोखन अपना भींजल आँख का पुतरी से हमके ताकत कहलन कि, "आनन्द जी हमरा विश्वास बा एह धरोहर के रउरा पास सुरक्षा मिली।"

एक सेकेन्ड सोचत हम जोखन का मेहरारू आयशा का ओर ताकत कहलीं कि, "आयशा जइसे तू अपना सासु के आखिरी रोटी शीशा का शो केश में रखले बाड़ू ओइसहीं अपना ददियासासो के धरोहर काहें नइखू सहेज लेत। एहसे त तोहार सम्मान बढ़ी। तोहार परिवार प्रगतिशील कहाई।"..... लेकिन आयशा ओह मियाइन एतना प्रेम से ना भरल रहली जवन जोखन का आजी का एके डाँट से आपन लेवा तुलसी का चउरा पर से हटा ले ले रहे। आयशा मुँह बिजुका के फेर लिहली।

जोखन का आजी के दूनो माला हम अपना पास रख लिहलीं। लेकिन ठाकुर जी के राखल सम्भव ना रहे। उनका साथ आरती-भोग के अनुशासन होला। एहसे हम जोखन के सलाह दिहलीं कि "फलाना मन्दिर में भक्त लोग का मुअला का बाद उनका ठाकुर जी के ले लिहल जाला आ सामूहिक रूप से आरती-पूजन-भोग होत रहेला, ठाकुर जी के ओहिजे जमा कइ दऽ।"

जोखन राम अपना मेहरारू का साथ उठ के जात रहलन। हमके लागल कि आयशा का बार में लाल रंग के जूड़ामणि जवन चमकत बा ऊ रेलगाड़ी का आखिरी डिब्बा के लाल बत्ती ह। धर्मों के रास्ता रेल का जंक्शने नियर होला जहाँ गाड़ी के राह बदल जाला।

●●●

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

कहानी

हरिजन ऐक्ट

❑ गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'

भोर के समय रहे। दखिनहिया हवा चल देले रहे। फउदार धोबी के मुर्गा बोले लागल रहे। बजरंगी उठके भंईस के सानी-पानी कइलन। आकाश में सतहवा नइ गइल रहे। अब सबेर होखे में ढेर देर ना रहे। बजरंगी का मन में अइसन संघर्ष चलत रहे कि आधा रात का बाद उनकरा आँखि से नीन अइसे उड़िगइल जइसे चुनाव जितला का बाद नेता। गाँव का पच्छिम ओर चमरटोली रहे; ओकरा एक कोना पर उनकर घर रहे। बाहर एगो पलानि में बइठ के ऊ सोचत रहलन। पिछलका दिन उनकरा आँखि का सोझा अइसे गुजर जात रहे जइसे टी०वी० पर कवनो धारावाहिक गुजरत होखे।

बात बीस बरिस पहिले के ह। बजरंगी ओह घरी आठ-दस साल के रहलन। उनकर बाबू बसंत जीयत रहलन। ओह घरी ऊ गांव गिरांव के नामी पहलवान रहलन। एक जून के भंईस के दूध थानेतर पी जासु। गठल शरीर-छरहरा बदन, ओहू पर दण्ड-बठइक कइला से अंइठल बांह आ रान जे देखे ऊ देखते रह जाय। माई ओझा बाबा से एगो जंतर लेके करिया धागा में गुहवा के बाबू का गला में पहिरा देले रहे जवना से केहू के नजर ना लागे। गांव के मुखिया के बेटा देखके जरत रहे। उहो कुश्ती लड़े बाकिर जतना नांव बसंतू के रहे ओतना ओकर नांव ना रहे। मुखिया जी गांव के अगुवा रहलन। हाकिम-हुकुम उनहीं का दुआर पर आके रूके। कवनो ममिला फंसे त उनहीं का दुआर पर पंचाइत होखे। बसंतू के सोहरत मुखिया परिवार के नीक ना लागे। भला-एगो चमार अइसन ढीठ हो गइल बा कि चमरटोली में से गइला पर खटिया पर से उठे ना। बड़ा विचित्र रिवाज रहे। गांव के बाबू लोग के छोट लइको चमार टोली से गुजरे त खटिया पर बइठल चमारटोली के लोग खाड़ हो जाय। उमिरगर लोग के त गइला पर सब हाथ जोड़ के खड़ा हो जाय पूछाय-सरकार कहसे अइली ह? आवे वाला चार-छः आदमी के लिया जा। खेत में दिन भर मजूरी करावे आ कुछ रूपया मजूरी देदे जवना से पेट भरल मोसकिल रहे बाकिर वृन्दावन में रहना है तो राधा राधा कहना है हाल रहे। बाबू लोग के विरोध करे। बाबू लोग का घरे गइला पर पानी पीये के अलग से एगो बरतन राखल रहे। ओह में चमार जब काम करे जासु स त दाना पानी दियाय । बजरंगी का ई समझ में ना आवे कि आदमी-आदमी में अइसन भेद काहे। पुछायलो चाहे त माई चुप करावे- बाबू लोग का बारे में अइसन ना कुछ कहे के। सुनला पर ऊ लोग बुरा मान जाई। जइसे होट बा ओहके देखत जो आ आगे उहे करिहे। भाई के धिरवनिया बजरंगी के इयाद रहे।

बाबू कुश्ती लड़े खातिर कई जगह जासु। देश-दुनिया देखला से उनकरा के गियान हो गइल रहे। ऊ बाबू लोग के आदर करसु बाकिर ओतने जेतना चाहत रहे। ई ना कि बबुआन टोलन के केहू रास्ता धइले जात बा त बाबू खटिया पर ले खाड़ हो जासु। ऊ खटिया पर ले तबे खाड़ होखसु जब उनकरा ले केहू ढेर उमिरगर आके उनकरा कीहें खाड़ होखे। कहबो करसु कि छोट उमिर का लोग का सोझा खाड़ भइला के का मतलब ? हम कवनो खरीदल गुलाम बानी थोरे? माई चुप करावे। अरे मुंह बन राखी एहसे का होई। अकेले चना भरसाइं ना फोर सके। बाबू कहँस- हं भरसाइं त ना फोरी बाकिर आंख फोर सकेला। आंख बा त जहान बा जानेलू न। माई चुप लगा जा।

गांव में नागपंचमी का दिने हर बरिस कुश्ती होखे। ओह साल मुखिया के लइका ताल ठोकलस कि जे ओके पटक देई ओके पांच सह रूपया इनाम। बसंतू आपन नाव लड़े के दे दिहलन। बसंतू का नांव देते मुखिया के लइका दिवाकर का चिन्ता हो गइला ऊ मुखिया जी से जोर लगवलस कि बसन्तू नांव वापस ले लेस एह साल गांव के चैम्पियन ऊ भइल चाहत बा। मुखिया जी पुत्र प्रेम में पड़ गइलन। ऊ भइल चाहत बा। मुखिया जी पुत्र प्रेम में पड़ अइलन। ऊ बसंतू के बोलवलन आ कहलन बसंतू तूं आपन नांव वापस लेलऽ हम पाँच सह रूपया तोहके पहिलहीं दे देत बानी भा एक हजार लेलऽ आ कुश्ती में पटका जइह। रूपया तहरा काम के बा। हम तोहार कुल्हि तरह से मदद करब। कई गो योजना सरकार से आइल बाड़ी स तोहरा के लाभ त कराइये देव तोहार घरो पक्का बनवा देब।

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

'सरकार ! बाबू साहेब मैदान मारल चाहत बाड़न त बल से मारसु छल के रास्ता काहें अपनावत बानी। रउरा त गांव के अगुवा बानी। बसंतू कहलन।'

"अब तूं हमके प्रवचन देबे लगलऽ" मुखिया के नाक-भौं चढ़ गइल। हम तोहके जवन कहली ह ओह पर सोचऽ। हम वेद पुरान जानीला मुखिया के सुर कड़ेर रहे।'

'सरकार ! ई ना हो सके। रउरा छोटका बाबू से कहीं कि ऊ, चुनौती वापस लेलेसु जइसे हर साल कुश्ती होत रहल ह होखे बाकिर गांव भर के ललकारला पर त हम ना मानब" बसंतू के जवाव रहे।'

'ना मनब, त जा हमार काम तोहके समझावल रहल ह। तोहन लोग बात के आदमी ना हउव। मुखिया का बोली में कही न कहीं नाराजगी रहे। बसंतू पवलगी कहलन आ चल अइलन।'

पंचइया (नागपंचमी) के तेवहार नगिचा गइल रहे। ओह दिन सबेरे गांव में हल्ला भइल कि मुखिया के पम्पिंग सेट के मोटर चोरी हो गइल बा। मुखिया थाना में रिपोर्ट दर्ज करा दिहलन जवना में चोरी में बसंतू के नाव रहे। बजरंगी का पूरा इयाद बा कि बाबू तीन दिन से कहीं ना गइल रहलन। इनकर जीवन अनकसाह रहे बाकिर पुलिस उन्हें चोरी का मामला में घर से पकड़ के ले गइल। थाना में बसंतू के बड़ा मारल गइल रहे। अन्दरूनी चोट आ अपमान के असर एतना भइल कि बसंतू जेल में दम तोड़ दिहलन। कहल गइल उनकरा निमोनिया हो गइल रहल ह। रोग अइसन गम्भीर हो गइल रहल ह कि डाक्टरी प्रयास का बावजूद ऊ ना बचलन। माई के रोवत रोवत तबियत बिगड़ गइल। बजरंगी माई का सेवा में दिन रात एक क दिहलन। उनकरा खातिर माई दुनिया में अनमोल रहे। नागपंचमी के कुश्ती भइल। मुखिया के पम्पिंग सेट चले लागल । एगो पुरान मोटर खरीद के आ गइल। गांव भर में कानाफूंसी रहे कि मुखिया पुरनकी मोटरवे रंगवा-बन्हवा के लगा दिहलन। चोरी के मामला त बसंतू के फंसावे के रहे। बजरंगी सुनलन त मन भिनभिना गइल। मुखिया की नांव पर ऊ थूक दिहलन। भाई बहुत समझवलन। ऊ इहो कहलन कि बिहार का नक्सलिन से मिलके बदला लीहऽ मुखवा के उन्हन से जान पहिचान बा। माई चुप करा दिहलस। जमुना भाई ढाढस बन्हवले। जमुना भाई पुलिस के सिपाही बाड़न। ऊ कहलन बजरंगी मुखिया आपन बदला कानून के प्रयोग क के लिहलन तूहूँ ओही तरे ल। बजरंगी भाई के गेयान क के मान गइलन। उनकरा बुझाइल कि ऊ कुछ क के कहीं चल जइहन त माई अबोध परि जाई।

भईंस के बोली सुनके बजरंगी के धेयान टूटल। नाद में के सानी खा धलले रहे। उठि के नाद में भूसा डललन ऊपर से खरी चुन्नी डाल के बगल में राखल पानी से हाथ धोके आके फेनु खटिया पर बइठ गइलन। भोर धीरे धीरे होखत रहे। झलफलाह हो गइल रहे। थोरकी देर का बाद भंइस दुहे क समय हो जाई। मन में फेनु बीतल समय इयाद परे लागल।

गांव के पंचायत भवन पच्छिम ओर खाला एगो जमीन के पाट के बनत रहे। दंगल जमीन के पाटे खातिर मुखिया चमरटोली के श्रमदान करे के आदेश दिहलन। बजरंगी के जमुना भाई बतवलन कि माटी का काम खातिर सरकार पइसा देले बा बाकिर पंचायत सेक्रेटरी आ मुखिया मिलके एइ पइसा के हड़प गइल आ बेगारी से काम पूरा करवावे चाहत बाड़न। बजरंगी के जाये से मना क दिहलन। ओह दिन मुखिया के अदिमी बेगारी खातिर चलावे आइल त बजरंगी नकर गइलन। इनकरा नकरला पर चमरटोली के लोग बहाना पा गइल सभे नकर गइल। मुखिया कीहें ई बात पहुंचल त ऊ खिनिस से लाल हो गइलन। ऊ कहलन- बजरंगिया सारे के ध ा लियावसऽ। मुखिया के हुकुम में देर रहे बजरंगी के उनकरा दुआर पर ध लियावल गइल। देखते प्रधान खिनिस से कांपे लगलन - सार, चमार के नेता बनत बाड़े? ऊ दू थपरा, दू लात लगावत कहलन कि आज तोर हाथ गोड़ एहिजे तोरि के ध देइब। बसंतू के त घमंड तोरि दिहली जा अब तू भइले ह। सांप से सपोले न होखी। पूरा चमरटोल के रास्ता बिगारत बाड़े। हम अपना बाप खातिर घर बनवावत बानी कि गांव खातिर कारे सारे बोल" प्रधान जी एक लात बसंतू के अउरी हुमच दिहलन। ना जानी कहां से आके भाई बजरंगी के छोप लेले रहे आ मुखिया का सोझा गिड़-गिड़ाइल मालिक, लइका गलती क देलस। काल्हु ले काम पर जाई। एकर जिम्मेदारी हमरा पर बा। ऊ बजरंगी के घरे लियाइल। घरे आवते बजरंगी भोकार मारके रोवे लागल। माई समुझावत रहे। ओही बीच में जमुना भाई आ गइल रहनि। मेहरारू नीयर रोवले काम चली। जमुना बजरंगी के समझवलन। चल, हमरा साथे थाना पर

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

रिपोर्ट कर त एकर मजा हम देखाइला। हमरा पर भरोसा करऽ। एह मुखिया के सबक सिखावल जरूरी बा। बजरंगी कुछ थथमलन। अरे थथमऽ मत। भऊजी ! हमरा कहले बजरंगी के जाये द। कवनो गड़बड़ी ना होखी। माई के हुकुम लेके बजरंगी थाना पर अइलन। थानेदार रिपोर्ट देखलस त ऊ बजरंगी का ओर फेंक दिहलस कवनो मामला नइखे बनत। मुखिया जी का खिलाफ मोकदिमा लिखावे आइल बाड़े। गांव में रहे के नइखे का ? भाग जो यहां से। थानेदार के कड़कल आवाज रहे।

बजरंगी थाना से बाहर निकलत सुनलन एह सारन के दिमाग खराब हो गइल बा। थाना में घुरहू कतवारू जेही चाहत बा रिपोर्ट लिखावे चले आवत बा, बाहरे नेतागिरी? बाहरे लोकतंत्र दरोगा जी के भाषण रहे।

अब का होखी बजरंगी जमुना का ओर देखलन। घबड़ा मत, हमरा साथे जिला पर चल। पइसा हम देब, जमुना कहलन। बजरंगी, जमुना का साथे गाजीपुर आ गइल रहलन। कचहरी में दरखास तेयार भइले आ मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के अदालत में पेश हो गइल। मजिस्ट्रेट ओह पर जाँच क के मुकदमा कायम करे के आदेश दे दिहलन। आदेश में थाना के इहो कहल रहे कि बजरंगी से जबरन काम न करावल जाय। आ केहू घमकावे मत। थाना एह बात के बेवस्था करे। वकील के फीस त सइ रूपया जमुना दिहलन बाकिर बजरंगी बड़ा खुश रहलन। ऊ जमुना के गोड़ छुअलन। ओही दिन पैरोकार से मजिस्ट्रेट के आदेश थाना पर आ गइल। बजरंगी आ जमुना घरे अइलन सांझ होत रहे।

अगिला दिने सबेरही पुलिस के जीप मुखिया जी कीहें खाड़ रहे। दरोगा बतवलन कि कई गो कारन का साथ हरिजन एक्ट के तहत मुकदमा कायम बा। काल्हि त हम ममिला सल्टा लेइब, बाकिर हरिजन एक्ट में कवनो अकिल ना लागी। रउरा के हाजिर होखे के परी। हाकिम के मूड ना ठीक रहल त रउरा जेलो जाये के पर सकेला। बजरंगिया समझौता क लेव त ई संकट टल सकेला ना त हमहूं मजबूर बानी। दू दिन के मोका बा सल्टावे के प्रयास करीं अगर सलट जा त ठीके बा ना त जमाना बड़ा खराब बा। हम त डांट के भगा देले रहीं, बाकिर केहू ओके आगे के डहर देखा दिहलस। कोर्ट के आर्डर के पालन करें के परी। दरोगा जी चाय पानी कऽ के जीप पर बइठ गइलन जीप थाना का ओर रवाना हो गइल।

दरोगा जी के रूख देखके मुखिया जी के चेहरा के रोब उड़ गइल। दरोगा जी पर उनका विश्वास रहे बाकिर पुलिस से ना दोस्ती ठीक न दुश्मनी। मुखिया जी के चेहरा देख के साथ के लोग समझ गइल कि ममिला गम्हीर बा। तेजू कहलन – रउरा हुकुम देतीं त राते रात बजरंगिया के काम तमाम क देती। मुखिया आंख गिड़ोर के देखलन जवना के अर्थ रहे चुप रह। मुखिया जी दुआर के चौपाल पर एहर-ओहर कुछ देर टहललन फेनु कहलन दुअरिका गाड़ी निकाल गाजीपुर चले के बा। दुअरिका मुखिया जी के ड्राइबर रहलन। पलक झपकत गाड़ी जाये के तेयार रहे। मुखिया जी गाजीपुर का नामी गिरामी वकीलन से मिललन कुल्हि के काट त मिल जा बाकिर हरिजन एक्ट अकाट रहे। सब इहे राय दिहल कि जमानत करा लीं भा पार्टी से मिल के एके वापस करा लीं ना त रउरा परेशान हो जाइब। मुखिया जी हरिजन एक्ट का सोझा अपना के असहाय पावत रहलन। बजरंगिया से कइसे बात कहल जाय। अब चमार का सोझा झुके के परी ! मुखिया जी घरे आके रात भर सोचले बाकिर मामला के कवनो हल ना निकलल।

सबेरे दुआर पर मुखिया जी बइठल रहलन। मन के चिन्ता दूर ना भइल। अचानक बल्लन चाचा लउक गइलन। चाचा मुखिया के उदास देख पंजरा आ गइलन। अझुराइल मामला सझुरावे में चाचा के नांव रहे। उदासी के कारन पूझला पर मुखिया जी कुल्हि कथा कहि ले गइलन। चाचा कुछ देर सोचलन फेनु कहलन कहीं जाये के नइखे न ? ना मुखिया जी कहले।

ठीक बा हम अबहिये लौटत बानी। बल्लन चाचा चमार टोली का ओर चल देहलन। लगभग दू घण्टा बाद चाचा लवटलन। मुखिया जी उनकरा ओर बड़ा आशा से देखलन। चाचा खटिया पर बइठत कहलन – बजरंगिया मोकदिमा उठावे के तइयार बा। बाकिर ओकर दूगो शर्त बाड़ी स। पहिलकी शर्त बा कि दस हजार रूपया ऊ आपन खर्चा बर्चा का रूप में लेई। दूसरकी शर्त बा कि तोहके भरल सभा में ओकर गोड़ छू के गलती के माफी मागे के परी। बोलऽ तइयार बाड़ऽ ?

अब हमार ऊ दिन आ गइल कि चमार-सियार को गोड़ पर गिरीं। मुखिया के मुंह खिनिस से लाल हो गइल।

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

चाचा उनकर बात सुन कहलन- बेकूफ मत बनऽ। पढ़ल लिखल हउवा। शूद्र भगवान के चरण हउवन सऽ। ई मान लिह कि भगवान का चरण पर मूड़ीं पटकले बाड़ऽ। सोच जनि ई मामला चली त तोहरा केतना लोग का गोड़ पर गिरे के परी आ सजा हो गइल त जिनगी खराब। पइसा जवन खर्च होखी तवन अलगा। चल्हांकी इहे कहाले कि आपना अझुराइल मामला धीरे से सझुरा ले। भृगु जी का लात मरले विष्णु जी के महिमा ना घट गइल। हम घरे जात बानी सोच के जदि मन राजी होखे त बता दिहऽ। ना त जवन मन करे तवन करिहऽ।

अगिला दिन बल्लन चाचा बजार जाये के तेयारी करत रहलन तबे मुखिया जी हाजिर हो गइलन। ऊ मिलते कहलन चाचा ! तोहरा बात के हम मान लिहलीं। रात बहुत सोचलीं ह बाकिर इहे ठीक लागल तूं जा बजरंगिया से बतियावऽ। चाचा कहले - ठीक बा जा हम बतिया लेइब। चाचा जवन दिन तय कइलन ऊ आज ह। बजरंगी का नीन ना परल रात बुझात बा ना जानी केतना बड़ हो गइल बा।

अरे बइठले रहबऽ कि कुछ कामो होई ?

माई के बोली सुन के बजरंगी के धेयानी टूट गइल। पूरा अंजोर हो गइल रहे। उठके ऊ घर का काम में लाग गइले।

बल्लन चाचा का दुआर पर- गांव भर के लोग बटुराइल रहे। बजरंगी बइठल रहलन। उनकरा बगल में जमुना भाई रहलन। एक ओर बल्लन चाचा मुखिया जी आ गांव के बबुआन लोग बइठल रहे। दरोगा जी के इन्तजार रहे। बल्लन चाचा के राइ भइल कि जवन होखे ऊ दरोगा जी का सोझा होखी त मजबूत होखी। अइसन न हो दूनो गोल में केहु पलटी मार जा। थोरकी देर में दरोगा जी के जीप आ गइल। ऊ उतर के चौपाल में आ गइलन। गांव में दरोगा के बड़ा मान ह। सब चाहे कि दरोगा जी उनकरा ओर एक बेर देख लेस। दरोगा जी बइठते कहलन - बल्लन बाबू जवन कार रवाई होखे शुरू हो जा। कप्तान बहादुर के वायरलेस रहल ह। हमें तलब कइले बाड़न। एहिजा आइल तय ना रहित त हम सीधे उनकरा कीहें पहुंच गइल रहतीं।

बल्लन चाचा खाड़ भइलन। कहे शूरू कइलन। भाई लोग मुखिया जी आ बजरंगी में कुछ कहासुनी हो गइल रहल ह जवन कोर्ट कचहरी तक पहुंच गइल बा। ई नीक बात ना ह। गांव के बात गांव में तय हो जा त उहे ठीक बा। माटी कहेले कि हमें छू के देखऽ आ मोकदिमा कहेला हमें लड़ि के देख। दूनों में पाहि लागि जाले। हम दूनों जाना से बात कइलीं ह। दूनो जाना सुलहा खातिर तेयार बा। मुखिया जी के अपना व्यवहार पर दुख बा। ऊ बजरंगी के पैर छू के माफी मांगिहन आ हरजा-खरचा के पूरा करे खातिर दस हजार रूपया दीहें। बजरंगी पिछला बात भुला के दरोगा जी का सोझा सुलहनामा पर दस्तखत करिहन आ मोकदिमा उठा लिहन।.... हँ त मुखिया जी उठीं आगे बढ़ीं, बजरंगी तूहूं खड़ा होखऽ। तनी आगे बढ़ आव। बजरंगी खाड़ होके आगे बढ़लन। मुखिया जी आके दस हजार रूपया उनकरा हाथ में थमावत उनकर गोड़ छुए के नीचे झुकलन तबले बजरंगी उन्हें भर अंकवारी धइ के गला लगा लिहलन। उनकरा बुझाइल कि आज बसंतू के आत्मा के शांति मिल गइल होई। कुछ देर तक दूनो जाना गले मिलल रहे। एकरा बाद बजरंगी सुलहनामा का कागज पर दस्तखत क के दरोगा जी के दे दिहलन।

बजरंगी के लागल कि उनकरा मन के एगो बड़हन बोझ उतर गइल। ऊ जमुना भाई के गोड़ पर मिलल कुल्हि रूपया ध दिहलन जइसे उनकर एहसान के कर्जा चुकवले होखसु।

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

●●●

फिकिर

❑ गोरख 'मस्ताना'

देश प्रेम के गीत बँसुरी गावत नइखे
बलिदानी के, केहू फूल चढ़ावत नइखे
अबका होई, बोलीं ना?
मन के गेंठी खोली ना!
वीर शिवा, राणा जी के तलवार मुराइल
रानी लक्ष्मी बाई के उपकार भुलाइल
इहे नमकहरामी ह S
एकरे नाम गुलामी ह S।
लहरत नइखे उमक उमक के कहीं तिरंगा
आजादी के रंग भइल जाता बदरंगा
फिकिर इहे कइले बा
मन के आकुल कइलेबा।
देशभक्त कोना में कतही कँहरत बाड़ें
सुख के दाना पानी खतिरा हहरत बाड़ें
भूख के मेडल बाड़ें टाँगत
देव से मउअत बाड़ें माँगत।
ऊँचगर बान्ह बन्हाइल , कल करखाना खूलल
संस्कार का ह S लोगवा, ई बतिये भूलल
देखीं , देशवा रोअत बा
अपने लाश के ढोअत बा।
भ्रष्टाचार में डूबल बा नेता अधिकारी
देश चलावत बा जे, उ लागे बैपारी
लोगवा कुल्ही पिराइल बा
भारत इहें दबाइल बा !

❑ बेतिया चम्पारन

●●●

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

गोरख पाण्डेय के कविता पर एगो विमर्श

बीतऽता अन्हरिया के जमनवा हो संगतिया सबके जगा दऽ

(अन्हरिया में जलत मशाल : गोरख पाण्डेय)

❑ सुशील कुमार तिवारी

साहित्य आ वेदना के एगो दूसरा से हमेशा गहरा सम्बन्ध रहल बा। सामाजिक स्तर पर प्रचलित रोजमर्रा के सच्चाई से उत्पन्न वेदना के जवन साहित्यकार जेतना गहराई से महसूस कइ के आत्मसात् कइ जाला, ओकरा साहित्य में ओतने ज्यादा यथार्थ के समझ आ निर्माण के स्वप्न दिखाई देला। गोरख पाण्डेय अइसने साहित्यकार रहले। आजादी के बाद भारतीय समाज में व्याप्त असमानता, अन्याय आ अराजकता के चित्रण का साथ-साथ उनका कविता में वैकल्पिक समाज व्यवस्था के खाका आ प्रतिरोध के स्वरूप समान रूप से मिलेला।

गोरख पाण्डेय के एगो खास विचारधारा से जुड़ाव-रहल, लेकिन ध्यान देने जोग तथ ई कि उनका कविता में ई विचारधारा कहीं से जबरिया थोपला नियर ना देखाई देले, बलुक परिवेश के यथार्थ के बीच से ऊ विकल्प के संरचना करेलन। गोरख पाण्डेय के कविता स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में सामंती संस्कृति के तस्वीर कुछ एह तरह से खींचेले -

एक दिन राजा मरलें आसमान में उड़त मैना
बान्हि के घरे ले अहलें मैना ना।

राजा कहै कुंअर से अब तूं लेके खेलऽ मैना
देख केतना सुंदर मैना ना।
खेले लगलें राजकुमार
उनके मन में बसल सिकार
पहिले पाँखि कतरि के कइलें, अब तू उड़िजा मैना ना।

तब फिर टांग तोड़ि के कहलें अब तूं नाचऽ मैना
ठुमकि-ठुमकि के नाचऽ मैना ना।

तब फिर गला दबा के कहले अब तूं गावऽ मैना
प्रेम से मीठा गावऽ मैना ना।

सामंती संस्कृति कइसे लगातार शोषण के चक्र में गरीब के फंसवले जाले आ ओकरा से ओकर जीवन आ सुरक्षा के मूलभूत अधिकारो छीन लेले, गोरख के कविता ओकर जीवंत दस्तावेज बा। समाज में धनी आ प्रभुता सम्पन्न वर्ग के समृद्धि के प्रमुख कारण किसान आ मजदूर हमेशा से रहल बाड़े, लेकिन उनकर संसाधन आ सुविधा दूनो पर कवनो अधिकार नइखे। विकास के प्रक्रिया के एह अंतर्विरोध पर गोरख के पैनी नजर देखीं -

छक-छक-छक-छक रेलिया जो चलली
त कहवां से आइल रे कोइलवा।
धरती के छतिया बजर के अन्हरिया
जेकरा के तोड़ि अंग-अंग कइलीं करिया
जब हम जगमग जोतिया जरवली
त कहवां से आइल रे कोइलवा।
केहू के बा पूरा-पूरा केहू के बा टुकड़ा
केहू ललचावे, देखि केहू रोवे दुखड़ा
सोन्ह सोन्ह रोटिया ई तउआ पर पकली
त कहवां से आइल रे कोइलवा।

ग्रामीण संस्कृति में महाजनी सभ्यता, सामंती संस्कृति आ स्थानीय प्रशासन के तिहरा दबाव में पिसत साधारण मेहनतकश वर्ग के दुःख आ दर्द के साथ गोरख

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

के संवेदनात्मक रिश्ता उनकर कविता के ऊ जमीन देला, जहाँ से ऊ गंवई-दुर्व्यवस्था के जीवंत दस्तावेज बन जाले –

केकरे नाँवे जमीन पटवारी
केकरे नाँवे जमीन ?

केकरे जांगर से माटी फुलाइलि
के खाए चाउर महीन ?

नालिस कइलीं दरोगवा आइल
बाबू के बंगला मुरगा कटाइल
मड़ई फूंक तमाशा देखलें
चमकवले संगीन। केकरे नाँवें जमीन ?
जेकर धुरिए में जिनगी सिराइल
ओकर नउआँ कहवां बिलाइल
जे धरती से दूरे रहेला
कइसे करेला अधीन। केकरे नाँवे जमीन ?

इ प्रक्रिया आजो जारी बा। व्यवस्था के साथ सांठ-गांठ कइके आजुओ धन आ बाहुबल के नाम पर गरीब-गुरबा के जमीन हड़पे के प्रक्रिया चल रहल बिया। गाँव में बहुत पहले से एगो कहावत कहल जाला कि जर जोरु आ जमीन बरियारा के हाथे शोभा देला। गोरख के कविता ए गंवई यथार्थ के उभारे में सफल बा।

गोरख के कविता में पूँजीवादी शासन प्रणाली में हो रहल शोषण के स्पष्ट तस्वीर बा। उत्पादन, विनिमय आ वितरण में असमानता आ ओकरा फलस्वरूप आर्थिक-विषमता के खाका, साधारण आ गंवई अंदाज में गोरख के इहां बा। मार्क्सवाद के सिद्धांत के प्रति आस्था होखला के बावजूद गोरख के कविता में वैचारिक आरोपण नइखे बलुक सामाजिक यथार्थ के चित्रण के जरिए उनका कविता में ई विचारधारा छलक-छलक के उफान लेत बिया –

गुलमिया उब हम नाहीं बजइबो,
अजदिया हमरा के भावेले।
झीनी झीनी बीनीं, चदरिया लहरेले तोहरे कान्हे
जब हम तन के परदा माँगी आवे सिपहिया बान्हे

कंकड़ चुनि-चुनि महल बनवलीं हम भइलीं परदेसी
तोहरे कनूनिया मारल गइलीं, कहवों भइल ना पेसी

दिनवा खदनिया से सोना निकलली रतिया लगवलीं अंगूठा।
सगरो जिनगिया करजे में डूबलि, कइलऽ हिसबवा झूठा।
जिनगिया अब हम नाहीं डुबइबो, अछरिया हमरा के भावेले।

स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्र के नाम पर जनता के जवना प्रकार से भुलवावल गइल, कहल गइल कि सरकार आ राजा दूनों रउवें हईं, रउआं जेकरा के चाहीं ओकरा के चुनीं, बदला में ऊ राउर सेवा करीं। लोक-कल्याण आ लोकरुचि के ध्यान रखे के घोषणा करे वाला लोकतंत्र के भारत में स्थिति प गोरख खुलके व्यंग्य कइले। कवना प्रकार से घोषणा आ वादा के जरिए, जनता के छलल गइल ओकर बानगी देखीं –

पहिल पहिल जब वोट मांगे अइलें त बोले लगले ना
तोहके खेतवा दिइअबों
ओऽमे फसलि उगइबों

दूसरे चुनउआ में जब उपरइलें त बोले लगले ना
तोहके कूइंयाँ खोनइबों
कुल पिअसिया मिटइबों

तीसरे चुनउवा में चेहरा दिखवलें त बोले लगले ना
तोहके महली उठइबों
ओमे बिजुरी लगइबों।
चमकति बिजुरी त गोसियाँ दुअरिया
हमरी झोपड़िया में घहरे अन्हरिया
सोचलीं कि अब तक जेके-जेके चुनलीं
हमके बनावे सब काठ के पुतरिया

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

अबकी टपकिहें त कहबों कि देखऽ तूं बहुते कहलऽ ना तोहके अब ना थकइबों
अपने हथवा उठइबों।

गोरख, नेहरू के लोकतांत्रिक समाजवाद के मॉडल के दुर्दशा पर 'समाजवाद बबुआ धीरे धीरे आई' नामक कविता में व्यंग्य कइले बाड़े।

गोरख के इहां केवल सामाजिक दुर्दशा के चित्रण आ व्यवस्था के आलोचना नइखे एगो सुन्दर आ समतामूलक समाज के स्वप्नो बा। अइसन समाज जवना में सब केहू बराबर, सुखी आ संपन्न होई –

सूतल रहलीं सपन एक देखलीं
सपन मनभावन हो सखिया।
फूटति किरनिया पुरुब असमानवा
उजर घर आंगन हो सखिया।
अंखिया के नीरवा भइल खेत सोनवा
त खेत भइलें आपन हो सखिया।
केहू नाहीं ऊँच-नीच केहू के ना भय
नाहीं केहू बा भयावन हो सखिया।
बइरी पइसवा के रजवा मेटवलीं
मिलल मोर साजन हो सखिया।

ई सपना पूरा कइसे होई ओकर स्पष्ट खाका बा गोरख के पास। सामाजिक संपन्नता आ विकास के आधार किसान आ मजदूर के एकता के जरिए तथा ओकर राजनीतिक इस्तेमाल कइके अइसन हो सकेला –

तू हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरनिया तोहार
तोहरा से भगली बन्हनवा के रतिया
हमरा से हरियर भइली धरतिया
रचना के हवऽ तूं बँसुलवा हो, हम रुखनिया तोहार।
तोहरे हथौड़वा से कांपे पूंजीखोरवा
हमरे हँसुअवा से छिले भूंइखोरवा।
तू हवऽ जूझे के पुकरवा हो, हम तुरहिया तोहार।

गोरख के कविता में भारत के साधारण जनता के दुःख-दर्द ओकर संवेदना, चेतना आ संघर्ष गहराई तक पइठल बा। एमे एकतरफ जहाँ यथार्थ से साक्षात्कार बा त दूसरी तरफ समस्या से निकले के स्पष्ट रूप से विकल्प आ जागरण के आह्वान बा –

बीतऽता अन्हरिया के जमनवा हो संगतिया
सबके जगा दऽ।
जेसे जरे पापवा के खनवा हो संगतिया
सबके जगा दऽ।
अंसुआ में डुबल सपनवा जगा दऽ।
हथवा जगा द हथियरवा जगा दऽ।
करम जगा द आ बिचरवा जगा दऽ।
रोसनी से रचऽ नया जहनवा हो संगतिया
सबके जगा दऽ।

समकालीन भोजपुरी कविता के नया तेवर आ दिशा देबे वाला कवियन में गोरख पाण्डेय हमेशा इयाद आवे वाला कवि बाड़न। उनकर रचल गीत सहज, सुबोध आ असरदार बाड़न स। सबसे खास बात ई कि उनका गीतन में भोजपुरी इलाका के किसान मजूरन के अंतर के आवाज के सही संधान आ स्वर मिलल बा। सबसे बड़हन बात ई बा कि उनकर गीत आजुओ ओतने प्रासंगिक बाड़न सऽ, जेतना पहिले रहे।

●●●

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

अकेल हंस रोवेला ए राम.....':
एगो पुनर्पाठ

❑ विष्णुदेव तिवारी

भोजपुरी कथा-साहित्य में ''अकेल हँस रोवेला ए राम ....'' एगो ना भुलाये वाला मार्मिक कहानी बिया। हालांकि ई कहानी एगो वास्तविक घटना से उपजल बा, बाकिर एकर 'वस्तु' मानवीय आ शाश्वत बा। विचारन के क्षेत्र में वाद, प्रतिवाद आ संवाद के अवधारणा के 'हीगेल' जन्म देले रहलन आ मार्क्स एकरा के छूँछ 'मैटर' से जोड़त वर्ग-संघर्ष के वैज्ञानिक व्याख्या कइले, अशोक द्विवेदी एह दूनो के संगेरत, एकरा व्यावहारिक सांच के उद्घाटित कइले कि संघर्ष का बाद, संवाद के स्थिति जल्दी कायम ना हो सके।

संवाद के स्थिति संघर्ष के स्थिति ना ह S । एह में कवनो पक्ष ना जीतेला, ना हारेला। ई त ऊ सामान्य स्थिति जेमे S ना पक्ष-विपक्ष के बात होला, ना बाद- प्रतिवाद के । वाद- प्रतिवाद से संवाद कायम ना होखे। श्रृंखला अभिक्रिया के तरह परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, बैमनस्य आ घृणो पैदा होले। बैर से बैर कबो शांत ना होला। कीचड़ से कीचड़ कबो ना धोवाला। बाद से प्रतिवाद के उत्पत्ति यथार्थ बा बाकिर अगली स्थिति संवाद के स्थिति ना ह S। ''अकेल हंस'' कहानी में अचेत हरखू के मरणासन्न अवस्था से उचरल शब्द एही सत्य के प्रकाशित करत बाड़े स। ''अचेत हरखू का देंहि में थोरिकी देर खातिर हरकत भइल। उनकर खुनियाइल पपनी, गँवे-गँवे उठले स आ मुँह से टूटल-फूटल बस अतने निकलल...''जइसन ऊ हतियार .... ओइसे तोहनी का.....उनहन में आ तोहनी में . ...कवनो फरक ...न...इ...खे।'' ई कहानी समकालीन भोजपुरी साहित्य के दुसरका कथा- विशेषांक में प्रकाशित भइल रहे आ एकर पृष्ठ भूमि यू० पी० के गाजीपुर जिला के एगो पुरान आ आतिशय दारूण घटना, ''शेरपुर'' कांड से जुड़ल रहे। कहानी राजनीतिक कुचक्र आ जातीय गोलबंदी के घृणित रूप प्रस्तुत करत, ई बतावे के चेष्टा कइलस कि प्रेम, स्नेह आ विश्वास के कमजोर आधार के तूर के हैवानियत के क्रूरतम महल आसानी से बनावल जा सकत बा, बाकिर ई महल सुख से सूते वाला आ राजनितिक भा सामाजिक अधिकारन के देबे वाला ना होके, 'लाक्षागृह' निअर अपना सिरजके के भसम क देबे वाला साबित होई।

भारत में जातियन के स्थिति आ समीकरण हरमेश एक निअर ना रहे बाकिर स्वतंत्रता के पहिले अलग-अलग आ वर्गन में जवन परस्पर समरसता आ सहानुभूति रहे, स्वतंत्रता के बाद ऊ सब क्रमशः छीजत चल गइल। महात्मा गाँधी के हिंसा जातिवादी हिंसा ना रहे, बाकी श्रीमती गाँधी के हत्या निःसंदेह जातीय हत्या रहे आ ओकरा बाद देश के विभिन्न हिस्सन में जे कत्लेआज मचल, ओकर जहर के लहर बेर-बागर अबो लपलपाए शुरू हो जाला। एने खेतिहर मजदूर आ दलित बगैरह के हक आ तरफदारी के लेके जवन साहित्यिक आन्दोलन पसरले स,ऊ कालान्तर में वीभत्स जातीय लड़ाई आ सम्मोहित- सेक्स का अधिकाई में एह तरी बदलले स कि वर्ग-संघर्ष साफ जाति संघर्ष में बदल गइल आ अनेक जातियन के आपन -आपन दस्ता आ सेना तैयार हो गइल आ कबो मजूरी के नाँव प, कबो बनि के नाँव प त कबो लेवी के नाँव प निरीह जन के गरदन कटात रहल। पुलिस आ प्रशासन तरह तरह क बहाना बना के अपना कर्त्तव्य के पूर्णाहुति में सिधवा आ ईमानदारे लोगन के आपन शिकार बनावत रहल।

''अकेल हंस रोवेला ए राम.....'' के करूण कथा गाँव के अचके बदलल अइसने राजनीतिक माहौल के जातीय विद्रोह आ गोलबंदी का पृष्ठभूमि में 'दिपना' आ बेइली' के उत्तेजक सम्मोहित-सेक्स के बीच उभरति बा। बेइली अपना नइहर आइलि बा आ सिरीपत राय के खेत में कटिया करत खा बनि के माँग प उनका से जान बूझ के अझुरा जात बिया आ उनके देख लेबे के

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

धमकी देत, बिना देरी कइले, अपना ससुरा चलि आवत बिया। ऊहाँ अइसने आन्दोलन के हथियारबंद सरगना दिपना से ई सब नून-मरीचा लगा के सुना घालत बिया। दिपना अपना चहेती के पत राखे का बहाना सिरीपुर के चमटोल में अपना अभियान, का तहत कैम्प करत बा। उहाँ अपना दल के कुछ मँजल नेतन से भाषण बाजी करा के सोझिया जन-समूह पर आपन प्रभाव जमावे के गरज से कहत बा- ''रउआ सब के परवेज भाई आ राम-सकल जी बहुत कुछ समझावल लोग। अब हमके अतने कहे के बा कि रउआ सब अपना के पूरा मन से तइयार क लीं। जालिमन के जवाब तबे दिया सकेला, जब आप लोग एकट्ठा आ एकवटल रहब। एक-एक क के कूल्हि जालिम जमीदारन के सजाइ दिआई, ताकि दोसरो के सबक मिलो।''

सिरीपत राय जिमदार रहले बाकिर एगो छोटीमुटी जिमदार, बाकिर शोषक आ जालिम त इचिको ना। बेइली के बाप हरखू के एकर अनुभव रहे। ''सिरिपत राय से उनका कबो कुछुओ खातिर हरतुज ना भइल। उनकर लड़िको कबो उनके बेजायँ ना बोललन सऽ।उनकर छोटका लइका जितेन्दर त घर के सवाँग मतिन उनसे मय बात पूछे ''.... कबो कुर्ता, कबो गमछी, कबो चदरा ....। आखिर कहवाँ से फरक आ गइल? बलुक उनुकरे लइकी आजु अइसन व्यौहार क दिहलस उनका संगे। ऊपर से अभिन तरनाइले बिया। ऊ का अझुरासु? केकरा से अझुरासु? सिरिपत राय से ? कि ओह लड़िकन सें, जवन उनके 'हरखू काका' कहि के काम अर्‌हावेले स।''

अँगरेज महाकवि टेनीसन एक बेर कहले रहले- ''ओल्ड ऑडर चेंजेथ यील्डिंग प्लेस टू न्यू।'' 'प्रसादो' जी अपना 'कामायनी' में क्षण-प्रतिक्षण बदलत प्रकृति के रूपन के रूपायित करत ई बतावत बाड़े कि परिवर्तन प्रकृति के शाश्वत नियम ह।बाकिर परिवर्तन के दिशा, यदि अन्हर खोह में जात होखे, जहाँ से मनुष्यता के विकास के हर राहि बंद होखे, त ऊ परिवर्तन ऊफर परे। ई परिवर्तन कबो स्वच्छ आ फलदायक ना हो सके कि अधिकार प्राप्त करे खातिर, दोसरा के जीए के शाश्वत अधिकार से वंचित क दिहल जाव! सिरीपुर में जमीन मालिकन का खिलाफ भइल आदमिअत के खून प हैवानिअत के अट्टहास आ फेरू 'वाद' के प्रतिक्रिया 'प्रतिवाद'। एह खेल में सर्वनास हो जाता निरीह हरखू आ उनकर परम मित्र गजाधार के। हरखू के कारूणिक मउवत बड़ा बेधत बा। इनरदेव राय के थपरा से बलबलाइल हरखू सिरिपत राय के लइका जितनरयना के मुवला क खबर सुनि के रोवे लागल रहले जइसे उनकर आपन औलाद मर गइल होखे। बाकिर इनरदेव राय के ई सब नकल बुझात बा। ऊ फूट परत बाड़े -' ''फेतुरत पसरबे कि बतइबे तूं? तोरा टोला में त कई दिन से मीटिंग चलत रहल हा! आ ससुर नकल पसरले बाड़ऽ तूं! मारऽ सऽ रे सरवा के!''

फेर त लाठी बरिसे लगली सन हरखू का देंहि पर आ ऊ तनिके देर में लहूलुहान होके चपता गइलन।

महाभारतकार व्यास एक जगह कहत बाड़े कि बैर लोहा के हथियार ह, जे अपना धार के नष्ट करेला। ई बात कवनो झूठ सिद्धान्त ना, जीवन के सांच ह ऽ आ ई सांच एह कहानी में हर जगह अपना के परोक्ष मा प्रत्यक्ष रूप से प्रगट करत रहत बा। बेइली के माई, लचिया, जबसे सिरिपत राय आ अपना बेटी के बीचे झंझट-हरतुज के बात सुनले बिया, तबे से बेचेत बा- जइसे ओकरा सोझा सत्य छछाते खाड़ होखे एह घटना के ऊ जस- जस भुलावे के कोशिश करत बिया, तस ऊ अवरू मन परत आवत बा। बेइली के ऊ बाति अभिन ले ओके बेचैन कइले बा- ''एह बेइज्जती के बदला ओकरा से ना कढ़नी त हमार नाँव बेइली ना '' मुँह- फुकवनो दिपना का बल प फउंकत बाड़ी... कहीं ऊहे एकरा के उल्टा-सुल्टा पढ़ाइ के नइखे नु भेजले? सुने में आवेला कि ऊ एघरी बड़का गिरोह बन्हले बा, खूनो कतल करत ना डेराला.....हे भगवान, एह मनसोख लइकी का कारन एइजा कवनो दोसरे बवाल जिन होखे? लचिया फेरू धबड़ाए लागल ''नीके निबुकइहऽ हे कालीमाई ! ऊ फेर गोहरवलस।''

लचिया के मन के कठोर संदेह, सांच बन के उजागर होता आ सिरीपुर लाशन से पट जाता। आदमी

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

आ आदमी के बीच के रिश्ता जनमरउअल सुबहा, शक, धृणा आ आतमघात के जहरीला रिश्ता में बदल जाता।

डॉ० द्विवेदी के ई कहानी अपना पूरा ताकत से चिचिया के ई कहति बा कि भटकल मन के, दिगूभ्रमित करतूत से, नाश आ प्रति- नाश के अलावा अउर कुछ हाथ ना लागे। ई कहानी एह बात के बतावत बिया कि बँदूक के 'सिस्टम' से जवन हठ संचालित होखे लागेला, ओमे मूल उद्श्य पाछा छूट जाला। खेतिहर-मजूरन के स्वाभाविक हक, दलित-शोषित आ वंचितन के अस्तित्व, सम्मान आ स्वाभिमान के स्थापित करे वाला आन्दोलन गोलबंदी, लँपटपन, अपहरण नर-बध, आतंक आ त्रास का ओर बढ़त आपन राह भटक चुकल बा। ऊ एगो नया आतंकवाद आ प्रतिहिंसा क राह धइ लेले बा।

देश के स्वतंत्रता में कवना व्यक्ति आ कवना विचारन के योगदान रहल बा, आज ले बहस के एगो मुद्दा रहल बा। कूर्सी तूरत बाबू अपना अधिकार के दुरूपयोग करत अफसर, खेत कबारत चोर, पान कचरत लंठ, दाम-कचरत बिचौलिया आ भाषाणबाजी करत जन- नेता कबो- कबो माघवी दशा में उचरेला लोग कि गाँधी जी देश के बेंच दिहले आ उनके चलते दँतचिअरई से जवन आजादी मिलल ओकर प्रगति- फल ह शोषण, वर्ग-संधर्ष आ गरीबी। सत्य ठीक एकरा उल्टा बा। प्रेम से जवन हक मिलल ऊ गोला-बारूद से मिलित त दशा अउरी खतरनाक होइत। कम से कम हरखू आ गजाधर निअर आदमी त रहले, जे मुअतो- मुवत भलमनसाहत, मनुष्यता आ सद्भाव के पाला ना छोड़ले आ पचास बँदिशन के बादो नफरत आ शिखंडी हिंसा के ना मानि के, शाश्वत मानव-प्रेम के बात सोचत, जहान से अइसे अलोपित हो गइले, जइसे कमल- कुसुम से सुगन्ध।

भारत के सत्य आ अहिंसा वाली स्वतंत्रता संसार के का दिहलस, नोबेल पुरस्कार विजेता पर्ल. एस. बक के एगो टिप्पणी से साफ होई कि युद्ध आ हत्या से हानि का अलावा कुछ हाथे ना लागी।

"Perhaps, We Americans do not yet fully understand the great lesson that India has to teach in thus winning her freedom. Beside her might triumph of a bloodless revolution our war of Independence shrinks in size and concept. India has taught humanity a lesson, and it is to our peril if we do not learn it. The lesson? That war and killing achieve nothing but loss.and that a noble end is assured only if the means to attain it are of a piece with it and also noble.''

"India through a traveller's Eyes'; an extract from' My Several Worlds'.

एकर माने इहो कि एगो अमेरिकी लेखिका हमनी से अधिका हमनी के मूल शक्ति के जानत बिया। एह जाने खातिर जवन तटस्थता आ सम्यक विवेक के जरूरत परेला ऊ मुश्किल से मिलेला। भोजपुरी कहानी में वर्ग-संघर्ष के नाँव प लिखाइल अधिकांश कहानी घुमरीपरउआ-रोग' के शिकार हो गइल बाड़ी स। उहनी के ना त कवनो स्तरे बा, ना प्रस्तुति आ विकास भा अंत के लूरे ढँग, ना सही सोच, बस एगो उन्माद, जोश आ भावुक वहशीपन में कलम कागज प दउरल आ फूल खिले के जगहा बिछी के टूँड़ डोले लागल। कहानी मनुष्य के कहनी ना बन के, जातीय अंश आ कुठाँ के दुधारी भोंथर तरूआर बन के रह गइल; जेकरा से ना डाढ़िए कटाई ना घासिए। समाज के हिंस्र पशुअन से रक्षा ऊ का करी?

बरमेश्वर सिंह के कहानी 'कथा-वृक्ष', में एह विषय के बढ़िया से निर्वाह भइल बा, बाकिर ई कहानी जादुई शैली में लिखाइल बा एह से एह में व्यंग्यात्मकता ज्यादा बा ,करूना दर्द के टभकन कम। अपना छोट कलेवर के बावजूद ई कहानी श्रेष्ठ बा। गठल बा, सोद्देश्य बा आ सम्यक संदेश देबे में सफल। एह कहानी के नैरेटर एगो प्रेत बा, जे प्रेत निअर आचरण करे वाला लोगन से पुछत बा - ''चहुँ, हमरा गावँ में केहू सामन्त ना रहे। सभे छोट-छोट किसान रहे। उनहन में सवर्ण आ अवर्ण दूनों आवत रहलें। तब ई घटना

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

काहें घटल रहें? आ सामंत त सामंत होला। सामंत के वर्ण से का सम्बन्ध? सामंतन के जाति में बाँटें वाला प्रगति-शील किसिम के लोग आखिर कवन सिद्धांत के रक्षा कइल चाहत बा?''

ई घटना रहे पीपर-गाछ प चिपकावल लाल सियाही से लिखल एगो पर्ची ''सवर्ण सामन्त वाद के खिलाफ जेहाद के श्री गणेश''आ शिव बालक काका आ उनकरा निअर अउर कई सिधवा आ भलमानस लोगन के नृशंस कतल कथा- वृक्ष के व्यंग्य अंत में अउरी मारक हो गइल बा-''गावँ वालन खातिर ऊ एगो करिया दिन रहे आ प्रगतिशील क्रान्तिकारियन खातिर ऐतिहासिक बाकिर, हमरा अस प्रतिक्रियावादी खातिर भी ऊ एगो यादगार दिन बा। काहेंकि, हम ओही दिन से प्रेत रूप में एह पीपर-गाछ पर निवास करत बानी। हालाँकि, ओही दिन से एह पीपर-गाछ का नीचे सामाजिक-न्याय वाली सरकार के पुलिस-कैंपो लागल बा, जउना के राइफल कई-कई दफा क्रान्तिकारी लूटि चुकल बाडें...।'

बाकिर 'अकेल हंस रोवेला...' के अंत एसे ज्यादा अर्थवान बा काहें कि ऊ सहज कलात्मक, यथार्थ आ जीवंत भइल बा-

''गंगाजी के एगो तेज लहर आइल आ किनार के खून सउनाइल बालू खँखोरि के बहा ले गइल। भीड़ में से एक ठउरा लात से उनके ठोकर मारत कहलस, ''बहुत गजरघईंठ रहल हा सरवा!' फेर दू गोड़ा निहुरि के हरखू के टँगलन स आ झुलुवा नियर झुलाइ के पानी में बीगि दिहलन स। छपाक् के आवाज भइल आ सबका चिंता में रोवे वाला 'हंस' आखिरकार गहिर नदी में समा गइल।''

'कथा-वृक्ष' में चरम सीमा के बाद 'उपसंहार' के जरिए कहानीकार कहानी खतम कइले बा। कहानी रचना के तात्विक आ व्यावहारिक नियम से अइसन कइल ठीक ना मानल जाला। प्रेमचंद के शुरूआती कहानियन में अइसन अंत प्रायः लउक जाला, जइसे... .

यह सब हो गया किन्तु वह बात जो अब होने वाली थी वह न हुई। राम रक्षा की माँ अब भी अयोध्या रहती है और अपनी पुत्रवधू की सूरत नहीं देखना चाहती, (ममता)।

'अकेल हंस रोवेला ए राम....' के अंत ना आदर्श प्रेरित बा, ना उपदेश गर्वित। अंतिम पाँति से ई जना सकत बा कि एहिजा कहानी-शीर्षक के चरितार्थ करावे के सहज कोशिश कइल गइल बा, वाकिर से इहो बात नइखे। ई पाँति अंत के मार्मिक आ प्रवहमान बनाके एगो 'इको' (echo) रच दे तिया, जवना से कई क्षण तक मन दुखी, बेचैन आ छटपटात रहि जात बा।

आधुनिक कहानी के जन्मदाता एडगर एलेन पो एक बेर कहले रहले कि हमनी के पासे कुल मिला के सतरह गो कहानी बाड़ी स आ लेखक उहनिए के अपना-अपना स्टाइल में लिखेला। 'पो' के कहे के मतलब ई रहे कि संवेदित मन में उगे वाला भाव निश्चित बा,,आ अलग- अलग कथ के माध्यम से ओह भावन के व्यक्त करेला। ई भाव भिन्न-भिन्न स्थायी आ संचारियन के जरिए, कवनो कृति में प्रगट होला आ सिरजन के संरचना आ दीठि के आधार प रस-परिपाक होत रहेला। व्यापक दृष्टि से देखल जाव त कहानी दुइए प्रकार के होली स-जीवन के कहानी आ जीवन-विरोधी कहानी। घृणा, द्वेष, वैमनस्य, अहं, आतंक, द्रोह, भेद,पाखंण्ड, झूठ, जातीय द्वंद आदि के बढ़ावा देबे वाली कहानी जीवन-विरोधी होखेली स। आ एगो काल में, धूमकेतु अस चमक के साहित्य-च्युत जे गिरेली स त फेर उहनी के कवनो थाह पता ना मिले। मौत के आतंक का बीचे उभरत 'अकेल हंस रोवेला ए राम...' जइसन कहानी शायद सबसे निर्दोष ... पक्ष- विपक्ष शून्य-क्षण में रचाली स, एहसे उहनी में मौत के क्रूरतम चुप्पी के बाद जिनगी के आब आ आभा दर्शित होला। एहिजा शाश्वत मानव-मूल्यन के प्रतिष्ठित करत कहानी स्वयं शाश्वत रूप ये प्रतिष्ठित हो जाले।
हक-वसूली के नाँव प विष-गाँछ बोवे वाला आ मजबूरन ओकर फल खाए वाला सिधवा लोगन के कहानी अँग्रेजी भा अन्य दोसरो-दोसरो भाषा में रचाइल बा।'वागर्थ'

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

अंक 40 जुलाई 1998 में प्रकाशित सगीर रहमानी के हिन्दी कहानी 'छू-ती, ती-ती ता सिद्धार्थ चौधारी आ Diksha at st. Mastin's में संग्रहीत के अँग्रेजी कहानी The leades of men, (द लीडर आफ मेन) कुछ अइसने कहानी बाड़ी स।

द लीडर आफ मेन- में घाही-घमंड के कारने 'बैक-वर्ड' आ 'फारवर्ड' के संघर्ष देखावल गइल बा। समूह-संघर्ष पृष्ठभूमि में बा। कथा-नायक रूप सिंह राजपूत होखला के वजह से 'बैकवर्ड' केडिया के हाथे बेर-बेर अपमानित होत आवत बा, बाकिर अंत में असह्य जलालत से आजिज आके घोर पीड़ा आ आक्रोश में पगलाइल समूचा लाबी के तहस-नहस करत खुद गंमीर रूप से घाही हो जात बा। मरणासन्न 'हरखू' आ घाही 'रूप सिंह' के दशा-साम्य नीचे पाँतिन में देखल जा सकल बा-

''ओकर मुँह सूज गइल रहे आ हाथ बुरी तरह थुरा गइल रहले स। आँखिन में सून-सपाटा जइसन कि हमनी के कबो-कबो बी.बी.सी. के डाकूमेन्टरी में देखावे जाए वाला अइसन लोगन के आँखिन में देखेनीं जा; जे संसार के दूरस्थ कोना में कवनो प्राकृतिक आपदा-भूकंप, सूखा भा चक्रवात से पीड़ित होले।

ई सब कहानी सत्य के जीवन से रचेली स, कवनो आयातित फार्मूला आ वैचारिक आवेश से ना। इहनी के उद्देश्य इहे होला कि थथमल गोड़ आ धुक-ध ुक करत दिल ठीक से चले लागँ 'स। बहुत हो गइल ध वंस, बहुत हो गइल नर-बध अब एकरा के रोकल जाव। बकौल दुष्यन्त -

हो गई है पीर परबत-सी पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

सगीर के ''छू-ती, ती-ती ता'' कहानी में मंजरी आ परथा के पवित्र-प्रेम अदृश्य धार प उपरात चलत बा। मंजरी जिमदार के बेटी ह आ परथा एगो अपढ़ मजूर। परथा नेक्सलाइट बन जात बा बाकिर मंजरी के बचावे खातिर अपना जान प खेल जात बा। अंत में केहू नइखे बाँचत-ना परथे, ना मंजरिए। लेखक के शब्दन में-

''सुबह बनास के बीचों बीच चाँचर के बाँस पर मंजरी और परथा की देह झूल रही थी। सूरज निकल आया था। विडम्बना थी कि अब तक, सूरज चढ़ने तक, इस की जिम्मेवारी न सेना ने ली थी और न ही दस्ते ने। भीड़ एकत्र थी। इस पार और उस पार। मौन था, झुकी हुई आँखें थीं और एक प्रश्न था... .?''

एहिजो वाद-प्रतिवाद के बीच पिसात निरीह जन। 'छु-ती, ती-ती ता' के अंत कुछ सिनेमाई बा, जइसे 'रोटी फिल्म में राजेश खना आ मुमताज के अंत ''अकेल हंस....'' कहानी के हरखू आ गजाधर के मौत सजीव यथार्थ बा, मेलोड्रॉमेटिक ना।

सगीर रहमानी आ डॉ० अशोक द्विवेदी के कहानियन में उद्देश्य साम्य के अलावे अउरियो कुछ साम्य लउकत बा। एह दूनो कहानी में गीतन के मार्मिक प्रयोग भइल बा। 'छू-ती, ती- ती- ता' के बिहारी मुसहर कवि चाचा के गीत गावत-गावत पागले हो गइल बा-

'' सेतिहे में खूनवा- कुजूनवा बहाव जनि,
माटी में मिलावऽ जनि जिनिगिया संघतिया।
कुफुते में बिहरेला छतिया संघतिया।''

एने ''अकेल हंस रोवेला'' में गजाधर के दरद 'करसी सुनुगि गइल आगि 'से एह तरी व्यक्त होत बा -

हउआ बहेला पुरवइया ए सजनी
करसी सुनुगि गइल आगि ए.....
निमियाँ के छाँह करूवाइनि,
सीतलि बहेला बतास ए ऽऽ...

सगीर के मंजरी हैवानिअत के आगे अकेले खाड़ होखे के हियाव राखति बा बाकिर डॉ० द्विवेदी के बेइली, अपना नाँव के ठीक उल्टा, मनुष्यता के हलकान करे खातिर, खुदे हैवान से हाथ मिलावे में संकोच नइखे करत। अपना मरद किसुना के दरमेस के दिपना के दोजख, दरिआव में दना-दन डुबुकी मारे में ओकरा

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

कवनो डर, लाज लेहाज भा ताप नइखे। अमानवीयता के हद तूरत अपना बाप हरखू के घघोटत ओकर मिजाज गरम तावा प लोटत बा- कथाकार लिखत बा-

'' तोहन लोग त जिनिगी भर गुलामी बजवल ऽ जा। कबो दुतकारल गइलऽ जा, कबो लतियावल गइलऽ जा। तबो उन्हनिये के गुन-गावत जिनिगी सिराइ गइल। हमके त इहे बुझाता न ऽ कि अगर ऊ तहन लोग का घरवो में घुसि के बेइज्जत क जइहें स नऽ , तब्बो तोहन लोग के बकार ना निकली!' बेइली के चिनचिनाइल दुआर पर लात धरते हरखू का सुनाइल। जइसे पधिलल सीसा कान में उतरि गइल होखे, ऊ तिलमिला गइलन, मन कइल कि झोंटा धइ के मार थपरा ओकर मुँह फोर देसु ...बाकि ऊ अपना के एकदम असहाय महसूस कइलन।''

बेइली एकदम सांच यथार्थ चरित्र बा। 'अकेल हंस रोवेला..' कहानी के खासियत बा यथार्थ -उपकरणन से यथार्थ के प्रतिष्ठित कइल।'छू-ती, ती-ती-ता में वस्तु, परिवेश, वेश देश... त यथार्थ बा, बाकी पात्र क्लासिक। मजरी सोचति बा-''नहीं जानती यह सब क्यों हो रहा है? सुनती थी, वर्ग संघर्ष है। विचार धारा की लड़ाई है। व्यवस्था परिवर्तन का आन्दोलन है। राज-नीति का खेल है। वर्चख की जंग है। बाप रे बाप! उसे क्या मालूम इतनी बड़ी-बड़ी बातें। अगर इन बातों का अर्थ ये लाशें हैं तो उसे नहीं जानना इन बातों को।.....''

फ्रांस के क्रांति में नेपोलियन रूसो के योगदान के बार-बार उल्लेख करत कहत रहे कि रूसो ना रहित त फ्रांसीसी क्रान्ति ना भइल रहित। भारत में, यदि कबो शांति आई त, निश्चित रूप से सगीर रहमानी, सिद्धार्थ चौधरी, डॉ० अशोक द्विवेदी, बरमेश्वर सिंह जइसन कई-कई लेखकन के नाँव कयामत तक उद्‌धृत कइल जाई, जे कला के चारूता के रक्षा करत मानव प्रेम स्थापन खातिर सत्य के विकृत ना कइले।

सगीर के 'छू-ती, ती-ती- ता' के प्रस्तुतियो में क्लासिक तेवर बा, जबकि 'अकेल हंस रोवेला.'' आदि से लगाइत अंत तक चाबुक के मार अस सटाक्! सटाक्! यथार्थ

-ऊरावं। मध्य बिहार का एक गाँव और उसकी एक सुबह। उधर, जिधर आकाश झुका है, धरती के गर्भ से नवजात शिशु जैसी कोमल, ललछहूँ सुबह धीरे-धीरे पाँव निकाल रही है।

-छू- ती, ती-ती ता

-उत्तर टोला का सौ फाल पुरूब, तिनफेंड़वा का ढूहा प बिटुराइल लोगन में हरखू आ गजाधर के छोड़ि के सब नवछेड़िये रहे। ओम्मे तीने-चार गोड़ा तनी मोंछिगर रहलन स, बाकियन के पाम्हिये फूटल रहे।....

-अकेल हंस रोवेला...

सगीर के भाषा प जबरजस्त अधिकार आ जबरजस्त तटस्थता के वजह से आतंकी यथार्थ के वर्णन करत उनका इचिको उढुक नइखे लागत-

''डोमन बहू, जिसे नरसंहार के दौरान गुप्तांग में गोली मार दी गई थी, विचार धारा शब्द का अर्थ नहीं जानती होगी। भीखना के दो माह का बच्चा जिसने माँ की छाती से अभी मुँह भी नहीं हटाया था और जिसे भाले की नोक पर खड़ा कर भेद दिया गया था, वर्ग संघर्ष या किसी व्यवस्था-परिवर्तन के आन्दोलन में शाामिल नहीं रहा होगा।....''

'अकेल हंस रोवेला...' में लेखक जीवन कथा कहला से अकुतात नइखे। एहिजा पृष्ठ भूमि में कुछुओं नइखे, जवन बा तवन एकदम आँख के सोझा। तबो, कहला से अधिका अनकहल रह गइल बा। कला के कवनो सुघर कृति के इहे विशेषता होला। सगीर के कहानी जातीय संधर्ष के अलावा एगो परिवार के टूटनो के ले के चलऽतिया आ एह में - स्थिति उरेहन में, कतहूँ से डँवाडोल नइखे होत। दूनो कहानियन में कथा-विकास के सूत्र नायिकन के जरिये बिनाइल बा।

'अकेल हंस रोवेला...' में कथा के भीतर अउरी कवनो कथा नइखे। पात्र संयोजन, परिवेश दर्शन, परिस्थिति प्रेक्षण संवाद-प्रेषण आ उद्देश्य निर्वाह-सब

में ई कहानी श्रेष्ठ बा। आधुनिक समाजिक जीवन के एगो त्रासद घटना का कुरूप आ संत्रास के लेके लिखाइल ई कहानी भोजपुरी साहित्य के अमोल थाती बा। ई थाती जोगावे जोग बा, समाज में, वर्ग संघर्ष का नाँव पर कुछ लोगन के थोपल हिंसा आ अमानवीयता का विद्रूप आ जहर घोरल माहौल में बाँचल खुचल मानवता, प्रेम आ सहिष्णुता के मिसाल, बनल हरखू, गजाधर अइसन चरित्रन के कारुणिक उत्सर्ग के उजागर करे वाली अइसन कहानियन के मूल्यवत्ता, स्वयं सिद्ध बा।

●●●

क्षेत्रीय समाचार

बृजमोहन प्रसाद 'अनारी' के तिसरकी भोजपुरी गीतन के बिटोर 'सितुही में मोती' के विमोचन 18.4.2010 दिन अतवार के संत यतीनाथर मन्दिर सुखपुरा, बलिया के धर्मशाला में एगो भव्य समारोह में भइल। कार्यक्रम में डॉ० जौहर शफियाबादी, प्रो० (डॉ०) सदानन्द शाही, समन्वयक भोजपुरी अध्ययन केन्द्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, डा० रवीन्द्र कुमार शाहाबादी, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, आ अनेकन स्थानीय विद्वान सब आइल रहें। 'पर्यावरण के बनावे में भोजपुरी लोक गीतन के भूमिका' विषय पर देरी तक ले विद्वान लोग आपन विचार दिहल। विलुप्त होत लोक बिधा जइसे, डफरा (चमरऊ) परवावज, गोंड़ऊ, मदघूस, शिवनारायणी, चइतीं, झूमर, खेमता, दादरा, कहरवा, जैतसार, जलुवा, डोमकच जइसन प्रस्तुति भइल।

❑ बृज मोहन प्रसाद 'अनारी'

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

धारावाहिक व्यंग

मंतिरीजी से पत्रकार के बतकही

❑ डा० रामदेव शुक्ल

पत्रकार ... 'हँ त मतिरी जी । अब बतकही सुरू कइल जाव।'

मंतिरीजी...'अरे कवने हड़बड़ी में परल बाड़S कुछ अउरी खा पीयSअराम कर, मनरंजन करS ,तब न गम्भीर बतकही होखी।

'पत्रकार', खा भइनीं' पी भइनीं आराम त दिन में हमन के भागिए में नाही बदा बा। रहि गइल मनरंजन त रउवाँ त ओही विभाग के मंतिरी न हईं ! हमन क कुल बतकही मनरंजने न होई ! मंतिरीजी', एइसन बात बा। पूछS का पूछे के बा?

पत्रकार....'पहिले ईहे बताईं कि मनरंजन विभाग के मंतिरी आपे के काहें बनावल गइल?

मंतिरीजी....'अरे बउड़म पत्रकार जी। अपनही समुझS जवने विभाग के चलावे के जोगता जवने विधायक में रही ओही के न ओह विभाग के मंतिरी बनावल जाई।'

पत्रकार....'त आप मनरंजन विभाग के कइसे चला रहल बानी?

मंतिरीजी....'हई देखS हमहीं से पुछत बाड़न! अरें पढुवा हवS पत्रकार हवS एतनो लूरि नइखे कि जानS कि हम मंतरालय कइसे चला रहल बानी।

पत्रकार..... 'देखीं। आपके सिरीमुख से सुनले के मजा अलगे होई न।

मंतिरीजी..... ;हँसे लगले। हँसी थमल त कहलें' देखS मनरंजन से का फैदा होला। ईहे न कि लोग हँसत रहे। अब्बे देखबे कइलS कि हम कौने लेखा मनरंजन कइनी हं। एही लेखा मनरंजन मंतरालय चलाईलें।

पत्रकार....'मंतरालय में रोज-रोज गम्हीर समस्या आवत रहेला। ओह सब के देखत में त माथा घूमि जात होखी। ओह सब के निपटवले के बादिए न हँसे के मौका मिलत होई?'

जइसे मानि लेईं कि सिनेमाघर बनवा के राउर चेलवा लोगन के मनरंजन करावत बा। सिनेमाघर के पास करे खातिर जाँच होखे के चाही। ओह जाँच में कवनो बाति के कसरि न रहे, ईहे देखल जाला। रउवा चेला के सिनेमाघर में आगि लागि गइल। कतने जने आइल रहलें मनरंजन करे आ लासि बनि के बहरा निकड़इलें। ओह लोग के मेहरी लइका टूअर हो गइले। जब पबलिक घेराव कइल त रउवाँ जाँच कमेटी बईठा दिहनी। सात महीना हो गइल। आजु ले राउर कमेटिया बइठले बा ! कवनो बात फरियाइल काहें नाही ?

मंतिरीजी..... कवन बात फरियावल चाहत बाड़S हों? अपनही कहि रहल बाड़न कि सिनेमाघर के मालिक हमार चेलवा चला ह। तब हम कवन जाँच कराइबि। आरे पबलिक में कुछ लोग हल्ला क के आपन मनरंजन करेलें।

पत्रकार..... मंतिरीजी एतना गम्भीर बाति के एह लेखा हल्लुक बना के मति बतियाईं। जानत बानी कि जवन लोग ओह आगि लगी में मरि नइले ओह लोग के मेहरी लइका दाना दानाके मोहताज बाने । रउवा हर बात में हँसिए मजाक सूझि रहल बा। बताई ओह लइकन के जिनगी कइसे आगे बढ़ी? ऊ का खाँ सँS, कइसे इस्कूल जा सँ, कइसे ओकनी के जिनगी आगे बढ़ी?

मंतिरीजी...;गम्भीर भइले के नाटक कइलें ''देखS सरकार से ओह लोग के चारि चारि लाख देवे के कहा गइल बा। अब का चाही ?

पत्रकार ....मंतिरीजी सात महीना हो गइल । कब मिली

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

? कहिया ले ? ऊ लइका दुअरे न रहिहें।

मंतिरीजी.....पत्रकार के अपने नियरे खींच के उनके कान में बोलले, "देखऽ ई बात हमरे तोहरे बीच में रहे के चाही । केहूसे मति बतियइह=चुनाव नियरात बा। कुछ दिन अउर बीति जाये द। तब ओह परिवारन के रूपया दियाई । ओह समे फोटो खिंचाई । ऊ सब फोटो तहन लोग के अकबारन में छापल जाई । टेलीभिजन पर देखावल जाई । तब न जनता सोची कि कवने पार्टी के वोट दिहले से फैदा होखी । सरकार के कुछ फैदा मिले के चाही न।"

पत्रकार... बाकि ओह लइकन के कवन असरा बा। कबले जीहें सब ? एगो बाति अऊर बा जेकरे गलती से एतना लोग दूअर हो गइल ओकरा के आँड़ बान्ह काहें नाही भइल ?

मंतीरीजी .... ऊत नाही होखे पाई । ऊ हमार चेला ह। हम एह विभाग के मंतिरी हईं त कइसे हमरिए चेला के सजाऽ हो पाई? रहि गइल दुसरकी बाति कि लइकन के खरचा कइसे चली । एगो उपाय त बा।

पत्रकार... कवन उपाय बा ।

मंतिरीजी...सुर संस्कृति सेवा संस्थान के नांव सुनले बाड़ऽ न। उनकी इहॉ चलि जा। उनसे हमार नांव ले के कहिद कि अनाथ लइकन के मदद करे खातिर सास्कृतिक कार्यक्रम करावें । बंबई से फिल्मी लोग के बोलावें । करोड़न के ध ांधा हो जाई ! ओही में से लाख दुलाख ओह दुअरन के दिया जाई । उनसे कहि दीं कि सरकार ओह कार्यक्रम से भइल आमदनी पर कवनो मनरंलन टिकस नाही लगाई। दान खातिर कारकरम होई त ओपर कइसन टैक्स फैक्स । कहि दीं कि आके आजुए हमसे मिल लें । हम उनके सब बात समुझाय के बता देवि। पत्रकार चुप रह गइले । उनकी चेहरा पर रीसि आ गुनानि सोझे दाहति रहल ।

पत्रकार के हाथ कस के धइले आ कहलें "गुनानी काहे करत बाडऽ/ तहरो हिस्सा के ध्यान राखल जाई । एह बेरा जा ।

पत्रकार ....हमरा कवनों हिस्सा नाही लेबे के बा । हमार काम ह जनता के साँच बात बतावल आ ओकरे हक की लड़ाई में ओकर साथ दीहल ।

मंतिरीजी ....बुड़बक हउवऽ। हमसे लोहा लीहल चहबऽ त जवनो एगो नोकरी जीये खायेके पवले बाड़ ऊहोछोरा जाई । जानत नइख कि तहरी अखबार के मालिक के नटई हमरे जुत्ता के निच्चे दबाइल बा। विसवास नाही होखे त कहऽ फोन करावत बानी । दउरल अइहें। जवन कहबि तवने करिहें । बोलऽ, का विचार बा। केकर लड़ाई लड़े के, ओह लड़िकन के ? कि आपन।

पत्रकार ..... मंतिरीजी एह बेरा हम जा रहल बानी हमन के बतकही के सुरूआत हो गइल बा । अबहिन कई बेर बइठकी होई तब जाके कुछ फरियाई ।

मंतिरीजी ...कुछ का सब फरियाई । खाली एतने ध यान राखे के चाहीं कि कुछ फरियाव चाहे नाही, लोकतंतर बाँचल रहे के चाहीं । आ एह बात में कवनो कसरि नाही राखे के चाहीं कि लोकतंत्रर तब्बे बाचल रही जब ओके चलावे वाला रहिहें । मतलब बुझाइल न ऽ? ओके हम तूँ बचवले रहल जाई त लोकतंत्रर के केहू का उखारि लेई । बुझि गइल न ऽ?'

●●●

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

कविता

चिउँटिन क खीस

❑ विजय मिश्र

चिउँटियन क रेला
एगो अगहर आगे-आगे
बाकी सब पीछे
हजारन के संख्या
एक राह एक ताल
एक राय एक चाल
का मिसाल-
संतुलन संचालन के
अनुशासन मेल मिलाप के
कवनो ना अलगाव
ना तनी छितराव
देखनी त जागि गइल साध
उमड़ि पड़ल भाव
"टोल-मोहाल
गाँव-जवार
कबो धीरे-धीरे
पहिले अपने घर परिवार
से अजमाइब !
बना के देखाइब
चला के देखाइब !!"
फेरू-
भिड़ गइनी काम में अपना
जोर लगवनी
माथा खपवनी
लाइन बनवनी
सीखत सिखावत
चलत चलावत
जिनिगी खपा दिहनी
बाकिर -
साथ-साथ चला ना पवनीं
एक राय बना न पवनी
साध साधे रहि गइल
कइल धइल सब बहि गइल ।
चिंउँटिन क सीख हम
चिउँटियो भर ना ले पवनी
अक्किल हेरा गइल
औकाति अंका गइल
सच समझ में आ गइल
अदिमी कहाये भर के
करतब त
चिउँटियोसे हलुक
अउर छोट लागल !

●●●

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

राशिफल 16.3.2010 से जुलाई 2010 तक

❑ डा० नरेन्द्र कुमार तिवारी

मेष– मेष राशि खातिर ई साल बढ़िया जोग में शुरू होता। एगरहवां स्थान पर गुरू अउरी छठा स्थान पर शनि चौतरफा लाभ करइहें। धनजन के बढन्ती होई। मुकदमा में जीत होई। दुश्मन बुरी तरह पराजित होइहें। घर परिवार में मंगल होई। जीविका के लाभ होई। व्यापार वगैरह में वृद्धि के जोगबा। वैवाहिक जीवन में मधुरता आई। अचानक कवनो विशेष लाभ होई। १ मई सन् २०१० से गुरू कमजोर हो जइहें जवना से बनल काम बिगड़ जाई। मेहनत के अनुसार लाभ ना होई। गुरूवार के दिन गाय के चना के दाल, गुड़ खियावे के चाही। "ऊँ वृहस्पतये नमः" के एकमाला जप करेके चाही।

वृष– वृष राशि के लोगिन के इ समय सामान्य रही। पढाई लिखाई में बाधा के सम्भावना बा। लइकन के परेशानी के सम्भावना बा। पेट में कुछ परेशानी रही। व्यापार व नौकरी में उन्नति के जोग बा। आमदनी के कवनो नया योजना बनी। माई बाप के तीर्थयात्रा करके जोग रही। कवनो नया काम शुरू करे में बाधा आई। गोचर से दशम गुरू अउरी पंचम रानि मध्यम फल दिहें। मन में अशान्ति रही। एक मई से गुरू शुभफल दिहें। ध्यान प्रतिष्ठा बढ़ी। हनुमान चालीसा के ११०० बार पाठ अउरी शनि के जप से सब काम ठीक होई।

मिथुन– मिथुन राशि वाला लोग के वृहस्पति शुभ बाड़न। मन में नया नया शुभ विचार उठी। पद प्रतिष्ठा में उन्नति होई। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिली। परिवार में मंगल काम होई। वृहस्पति के चलने विवाद में सफलता मिली। एह लोगन पर शनि के ढैया भी बा। शनि उलटा फल दिहे। सोचल समझल काम बिगड़ी। होत होत काम बिगड़ी। पत्नी के कष्ठ अउरी विवाद के जोग बा। समझदारी के काम में नुकसान होई। हनुमान जी के पूजा कइला से शनि के प्रभाव समाप्त हो जाई। बजरंग बाण के पाठ कइला से सब काम बन जाई।

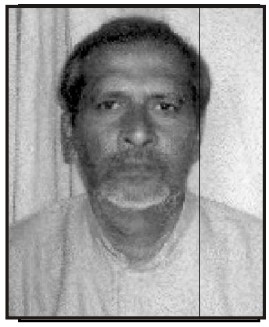

कर्क– ई समय कर्क राशि वाला लोग खातिर मिलल जुलल फल वाला बा। गोचर से आठवां गुरू विपरीत फल दिहें। अनेक प्रकार के परेशानी आई। समस्या के बोझ से दबे के परी। निरर्थक भाग दौड़ से परेशानी होई। बेटा बेटी के विवाह में धन खरच होई। परिवार में रोग के अधिकता रही। राजकीय अउरी मुकदमा के समस्या बनल रही। तृतीय भाग के शनि शुभ फल दिहें। शनि के कारण पराक्रम अउरी बुद्धि रही। शत्रु पराजित होइहें। मित्रन के भरपूर सहयोग मिली। एक मई से गुरू शुभ फल देवे वाला होइहें। व्यापार के नया योजना बनी। वृहस्पति के पूजा से विशेष लाभ होई।

सिंह– सिंह राशि के लोग पर शनि के साढ़े साती चलत बा। गोचर भाव से सातवां भाव के वृहस्पति शुभफल दिहें। आर्थिक परेशानी के साथ दाम्पत्य जीवन सुखी रही। विद्या व्यवहार व सामाजिक प्रतिष्ठा बढी। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिली। गृह निर्माण के दिशा में सफलता के जोग बा। दूसरा भाव के शनि के कारण अकारण विवाद से मन में बेचैनी रही। राहु केतु अनुकूल फल देबे वाला बाड़न। बीच बीच में विशेष लाभ होई। एक मई से गुरू आठवां भाव के हो जइहें। गुरू के कारण अनेक प्रकार से परेशानी आई। मन अउरी शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ी शनि अउरी गुरू के पूजा जरूर करावे के चाहीं।

कन्या– कन्या राशि के लोगन खातिर ई समय संघर्ष के समय वा। शनि के साढ़े साती के प्रभाव रहीं।गोचर से छठां वृहस्पति भी विपरीत फल दिहें। एह दूनों ग्रह के कारण विवाद, उलझन अऊरी अपयश के कारण मानसिक परेशानी रही। माता पिता के शाारीरिक पीड़ा होई। आजीविका के कवनों नया योजना बनी। प्रवासी जीवन जिये के पड़ी। चोट चपेट के सम्भावना रही। एक मई से गुरू अनुकूल

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

होइहें ओकरा बाद परिवार में सुख शान्ति आई। सांसारिक सुख सुविधा के प्राप्ति होई। परिवार में मंगल काम होई। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिली। राहु केतु के कारण स्थान परिवर्तन के जोग बा। सुन्दर काण्ड के पाठ कइला से स्थिति ठीक रही।

तुला– तुला राशि के लोग खातिर पंचम भाव के वृहस्पति शुभदायी बाड़े। ए राशि वाला लो पर शनि के साढ़े साती भी रही तबो समाज में मान प्रतिष्ठा बढ़ी। मंगल काम होई। व्यापार, नौकरी में उन्नति होई। मांगलिक काम में बाधा आयी। जल्दी बाधा दूर हो जाई। परिवार बढ़े के जोग बा। विद्या बुद्धि में वृद्धि होई। खरच अधिक होखला से मन में बेचैनी रही। विद्या के क्षेत्र में सफलता मिली। एक मई के बाद वृहस्पति कमजोर हो के विपरीत फल दिहें। रोग अउरी शत्रु के प्रभाव बढ़ी। पेट में परेशानी रही। लइकन से मनमोटाव होई। बारहवां भाव के शनि परेशानी में डलिहें। शनि के जप तथा बटुक भैरव के जप से सब शान्ति मिली।

वृश्चिक– वृश्चिक राशि के लोग के इ समय सामान्य रही। आर्थिक कठिनाई रही। चतुर्थ के वृहस्पति के कारण मन अशान्त रही। आय से अधिक खरच रही। शनि लाभ दायी रहिहें। प्रवासी जीवन जीये के पड़ी। काम के सफलता खातिर कठिन मेहनत करे के पड़ी। अचानक विशेष लाभ के योग बा। रोग से छुटकारा मिली नौकरी में पदोन्नति होई। परीक्षा में सफलता के योग बा। साथी से सहयोग मिली। एक मई के से वृहस्पति पाँचवा भाव में आइ के शुभ फल दिहें। हरेक काम में सफलता मिली। बौद्धिक विकास होई। पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होई। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता खातिर रूद्राभिषेक करावे के चाही।

धनु– धनु राशि के लोग के इ समय सामान्य रही। पद प्रतिष्ठा में कमी आई। खेती व्यवसाय में घाटा के जोग बा। अपना वश के काम में भी रूकावट आई। शारीरिक सम्बन्ध में कटुता आई। नौकरी व्यवसाय में परिवर्तन के जोग बा। न्यायालय के काम में रूकावट आई। मई में वृहस्पति के राशि परिवर्तन के कारण राहत मिली। जमीन, जायदाद में लाभ होई। रोग से मुक्ति मिली। पारिवारिक सम्बन्ध में सुधार होई। सोचल काम सफल होई। धनु राशि के राहु एवं मिथुन राशि के केतु के कारण मानसिक परेशानी बढ़ी। महा मृत्युंजय जप व हनुमान चालीसा के पाठ से शुभ होंई।

मकर– मकर राशि के लोग पर वृहस्पति के अनुकूल दृष्टि बा। पारिवारिक सुख में अउरी मधुरता आई। परिवार में विवाह वगैरह मंगल काम होई, परिवार बढ़ी शत्रु पराजित होइहें। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ी। बढ़िया विचार मन में आई। चल अचल सम्पति के बढ़न्ती होई। धार्मिक काम में बाधा आई। व्यापार में सामान्य लाभ के जोग बा। राहु केतु ए राशि खातिर एह समय ठीक नइखन चलत। आर्थिक स्थिति डावांडोल करिहे। मई से वुहस्पति विपरीत फल दिहें। अनेक प्रकार के विध्न बाधा उपस्थित होई। पद प्रतिष्ठा में भी कमी आई। नौकरी में अड़चन, उद्योग धन्धा में भी कमी आई। वृहस्पति के मन्त्रजप से लाभ होई।

कुम्भ– कुम्भ राशि के लोग शनि के ढ़ैया के चपेट में चलता। साल के शुरू में कुम्भ राशि पर वृहस्पति के रहला से अनेक प्रकार के परेशानी आई। पारिवारिक विवाद अउरी मानसिक परेशानी रही। स्वास्थ्य में गिरावट आई। मानप्रतिष्ठा में भी कमी के जोग बा। शनि के कुप्रभाव के कारण झंगड़ा झंझट व लोकापवाद के सामान्य करे के पड़ी। अपना लइकन व परिवार से भी मन मोटाव होई। अइसना हालत में बड़ा सोच-समझ के कवनों काम करे के चाही। एगरहवां भाव (स्थान) के राहु लाभकारी बाड़े। राहु के कारण धार्मिक काम में मन लागी। एक मई से वृहस्पति ठीक हो जइहें। मई से दिन दशा में सुधार होई। रूकल काम पूरा होई। परिवार में मंगल के काम होई। हरेक शनिवार के सुन्दर काण्ड के पाठ करे के चाही।

मीन– मीन राशि के लोगन खाातिर ई समय मध्यम चलत बा। परिवार में रोग के अधिकता रही। पठन पाठन में भी बाधा आई। व्यर्थ के यात्रा तथा अपव्यय के कारण मन में

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

बेचैनी रही। स्थान परिवर्तन के जोग बनता। वाहन से भय अउरी आपरेशन के सम्भावना बा। मन में तरह तरह के विचार आई। शनि के वजह से शारीरिक, आर्थिक व मानसिक परेशानी झेले के पड़ी। दशम- भाव के राहु के कारण तीर्थयात्रा होई।
अचानक विशेष लाभ होई। भूमि भवन सम्बधित सफलता के जोग बा। गोचर भाव से वृहस्पति ठीक स्थिति में नइखन। वृहस्पति के जप करावे के चाहीं अउरी हरेक वियफे के चना के दाल, हल्दी, गुड़ पियर मिठाई गाय के खियावे के चाहीं तथा दान करे के चाहीं।

: जुलाई तक वियाह के मुहूर्त्त :

ज्येष्ठ कृष्ण दूजि दिन शनिवार ता. 29.5.2010 राातिभर
ज्येष्ठ कृष्ण तीज दिन रविवार ता. 30.5.2010 दिन में 2.13 के पहिले विवाह के दिन बा।
ज्येष्ठ कृष्ण तीज दिन सोमवार ता. 31.5.2010 रातिभर
ज्येष्ठ कृष्ण नमी दिन रविवार ता.6.6.2010 भोर में 4.38 बजे तक
ज्येष्ठ कृष्ण दशमी दिन सोमवार ता. 7.6.2010 रातिभर
ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी दिन शुक्रवार ता.11.6.2010 रातिभर
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी गुरूवार ता. 16.6.2010 रात्रि में 12.48 बजे तक
ज्येष्ठ सुदी अष्टमी दिन शनिवार ता. 19.6.2010 रातिभर
ज्येष्ठ सुदी 10 दशमी दिन सोमवार ता. 21.6.2010 रातिभर
ज्येष्ठ सुदी द्वादशी दिन बुधवार ता. 23.6.2010 रातिभर
आषाढ़ वदी एकम दिन रविवार ता. 26.6.2010 रातिभर
आषाढ़ वदी दूज दिन सोमवार ता. 28.6.2010 रात में 1.22 तक
आषाढ़ वदी सत्तमी दिन शनिवार ता. 3.7.2010 रातिभर
आषाढ़ वदी अष्ठमी दिन रविवार ता. 4.7.2010 रातिभर
आषाढ़ वदी एकादशी दिन गुरूवार ता. 8.7.2010 रातिभर
आषाढ़ वदी द्वादशी दिन शुक्रवार ता. 9.7.2010 भोर में 4.23 तक
आषाढ़ सुदी तीज दिन बुधवार ता. 14.7.2010 भोर में 5.2 तक
आषाढ़ सुदी पंचमी दिन शुक्रवार ता. 16.7.2010 रातिभर

●●●

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

कन्हैया पाण्डेय
के एगो गीत

डहकि-डहकि रोवे टुटही पलनिया
हँसेले महलिया ठठाय
जंगरा ठेठवले में जिनिगी ओरइली
गरीबा के दुख ना ओराय ।

भोरवा से रतिया ले लमहर खटनिया
मटिया में मिलि जाले सगरी जवनिया
मथवा प अउन्हल दुख के पहड़वा
रहि-रहि रोज अरराय ।

तिक्खर घामवा में जरि जाला देहिया
टूटे नाही तवनो प धरती से नेहिया
सहलो प कठिन कलेसवा-बिपतिया
कबहूँ न सपना फुलाय ।

धरती के ललवा बनल बा भिखरिया
कइसो बचवले बा आपन पगरिया
खूनवा-पसेनवा से सँचल इजतिया
कउड़ी के मोलवा बिकाय ।

कसि के बन्हाइल जाता गरवा में फँसरी
तड़पेले जइसे कि जालवा में मछरी
हरियर लकड़ी गरीबवा के जिनिगी
सुनुगे न, लहके, बुताय ।

●●●

Arjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

'पाती के कई गो अंक मिललन स। एह नया रूप आ कलेवर में 'पाती' देखि के मन लहलहा गइल। सोचनी कि एगो कहानी लिख के भेजब, तबे जबाब देइब....कुछ दिन 'पाती' के अंक ना अइलन सऽ, आर्थिको परेशानी होले। ई ऊहे जान सकेला, जे पत्रिका निकलला में एह स्थिति से गुजरल होखे। आजु नया रूप देखि के लागल कि 'पाती' का पीछे जवन लमहर साधना बा, उहे खास बा। एह साधना के हमार प्रणाम।

गिरिजा शंकर राय 'गिरिजा'
पत्रक□ुरम, राप्ती नगर, आरोग्यमंदिर, गोरखपुर।

'पाती' नया आकार आ कवर -में बहुते नीमन लागल । अक्सर रउरा कवर के चित्र आ डिजाइन में कवनो न कवनो सनेस आ साँच छिपल रहेला। मथेला से भीतर का सामग्री क बहुत कुछ अंदाज मिलि जाला। बहुत समय से एह पत्रिका के क्रियेटिव फोकस, अक्सर एकरा कभरे से लउक जाला। ओइसे 'पाती' में कहानी , कविता, गजल, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, फीचर आलेख त रहबे करेला, बाकिर जवन सबसे खास बात हमके बुझाला ऊ एकर गंभीर समीक्षा-आलोचना वाली नजरिया बा। भोजपुरी- साहित्य के प्रदर्शन का साथ ओकरा मूल्यांकन खातिर रउरा पत्रिका में भरपूर बढ़ावा मिलेला। आशा बा'पाती' का जरिये भोजपुरी जीवन-जगत आ स्तरीय साहित्य का बारे में जाने-समझे के अवसर हमहन के आगहूँ मिलल करी।

विजय राज श्रीवास्तव, रामनगर, एल, डी, ए, कालोनी, ऐशबाग, लखनऊ।

□

'पाती' के नौका अंक मिलल, बहुत नीक लागल। संपादकी त हर बेर गम्हीर आ मौजूं रहबे करेला आनंद, संधि ादूत, स्व० मोती जी आ चन्द्रदेव जी के रचना बहुत अच्छा लागल। कहानी में हीरालाल, राजगुप्त आ आशारानी का साथ रामदेव जी के कहानी के अलगे थीम आ स्टाइल बा। कन्हैया प्रसाद जी चौधरी के कहानी मार्मिक बा। 'कसौटी' में विष्णुदेव के समीक्षा 'कथावृक्ष' पढ़लीं, जिज्ञासा जागल कि ओकर कहानी हमहूँ पढ़ितीं बाकिर 'कथावृक्ष' मिली कइसे?

प्रभात कुमार तिवारी, तूरा, (मेघालय)

'पाती' के नई दिल्ली प्रतिनिधि सुशील बाबू के जरिया से पत्रि□ा के अंक 51/52–53/54 अउर 55/56 पढ़े के मिलला। 'पाती' के माध्यम से रउरा एतना बरियार काम के जोखिम उठावे के जिम्मा ले ले बानीं। जोखिम एसे कहनी की एह समय, अउर बेरा में जेवना 'दौर ' से भारतीय समाज गुजर रहल बा ओह बेरा में, एतना परिश्रम सभे विधा पर सामग्री दे के बाड़ा नेक अउर दूरगामी काम होता बा। 'पाती' में ज्ञान के भंडार बा अउर चिंतन के पाका जमीन तइयार हो गइल बा। सामयिक चिंन्तन अउर मनन पत्रिका में जान डाल देले बा। पढ़ि के काफी संतोष अउर विसवास भइल। उम्मीदो जागल की भोजपुरी समाज आ संस्कृति के कलेवर से सभे दुनिया-जहान परिचित होत बा। तीनों अंकवन के संपादकीय पढ़ि के 'पाती' का स्तर के अंदाजा लगावल जा सकेला। 'आजादी' के मतलब, 'महंगाई' आ 'आधुनिकता' 'एगो कृषि प्रधानदेश के विकास-यात्रा', 'भूख से लड़ाई' जइसन विचार-प्रधान संपादकीय पढ़ि के ज्ञान अउर चेतना में वृद्धि भइल। एकरा खातिर हमार साधुवाद लिहीं। तीनों अंक के हर रचना पर बात कइल त कठिन बा, पर हर विधा के जगह मिलला से पत्रिका 'पाती' के ऊँचाई समझल जा सकेला। पत्रिका के हर एक पन्ना में भोजपुरी के माटी समाइल बा। 'मुद्दा' के अंदर काफी गहिर जानकारी अउर 'कसौटी' से कई किताबन के जानकारी मिलल। 'पाती' के आकार, साज-सज्जा बहुते सुन्दर लागल। एगो छोट खा सुझाव दिहल चाहत बानी, ऊ ई की बदलल समय में नया-नया 'विमर्श' अउर 'सोच' के अऊरी जगह मिले के चाहीं। एसे पत्रिका में अउर चार चांद लागि जाई।हाशिया के आवाज के हाशिए

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

के लोगन से लिखवाईं, वरना भोजपुरी समाज के जड़ता दुनिया से मुकाबिला में पीछा रहि जाई।

डा० रामचंद्र जे०एन०यू० नई दिल्ली-67

'पाती' के एगो अंक 57 एने, बहुत दिन का बाद देखे के मिलल। अचरज भइल कि 'पाती' के अतना अंक निकल चुकल बा। एकर आकार, डिजाइन आ कवर त पुछहीं के नइखे। अब ई पत्रिका पहिले लेखा खाली साहित्यके, नइखे रह गइल। बाकिर हमके लागल कि पहिले लेखा दमदार साहित्य एमे काहें नइखे? हो सकेला, अब भोजपुरी साहित्य लिखवइयन के नवकी जमात में ऊ जुनून नइखे। या कि अब ऊ लोग हिन्दी में लिखे लागल बा या कि 'पाती' में अब, साहित्य से बेसी समाजिक-राजनीतिक भा अउर सामयिक विषयन के जगह मिल रहल बा ? तब्बो कुल मिला के 'पाती' के स्तर अबहियों बहुत अच्छा बा। भोजपुरी क्षेत्र के दिशा आ बोध खातिर पत्रिका सामग्री के रंग-ढंग बदलल जरूरी बा। अइसन प्रखर विचार दृष्टि से संपन्न पत्रिका के सभे सराही।

अलख प्रताप सिंह, दुर्ग, भिलाई (छत्तीसगढ़)

दिसम्बर 2009 के अंक घरे ले आके आदि से अन्त ले मन लगाके पढ़ली। बाड़ा रूचल। समीक्षा लिखे जोगत नइखीं बाकिर आपन बिचार डेरात-२ लिखतानीं। गलती लउके त अनसाइबि जनि। स्व० मोती बी०ए० के इयाद वाली कविता (गीत) छपले बानीं ई सराहनीय काम कइले बानीं। संगही संगे अपना माटी के सुगन्ध डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के 1963 के भाषण सोना में सोहागा बा।राउर डा० भगवती प्रसाद द्विवेदी जी के गीत आ डा० रामदेव शुक्ल के 'कतिकहा विदवान' पढ़े जोग बाड़ा बेबाक बोले आ कहे वाला चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के 'माथे मुड़ाते ओला पड़ल' उहाँ के साफगोई के कहताऽ। दाल-भात-तरकारी के नउँवा कलछुल बाड़ा नीक लागल।

बृजमोहन प्रसाद 'अनारी' सुखपुरा, बलिया

पाती-55/56 आ 57 मिलल। बहुत-बहुत आभार आ रंग में अइले खातिर बहुत-बहुत बधाई।
पाती पलटते 'बदरा रे बदरा' पुराकत कविताई मन मोह लेलस। गीत-गजल में काफी दम बा खासतौर से बशर आर.बी. का गजल आ त्रिभुवन प्रसाद सिंह प्रीतम का गीत में। अशोक द्विवेदी आ भगवती प्रसाद द्विवेदी के मंजल हाथ कविता में कमाल कइले बा। कहानियन में आशा रानी लाल अउरी हीरा लाल हीरा के कहानी अच्छा लागल। केंवाड़ी का आड़ से 'कतिकहा विद्वान' के असली रूप खूब नीक से लउकल। जबले केंवाड़ी के आड़ ना मिलेला कहानीपन के रसो ना मिलेला। ई कहानी 'छद्मवेशी महनीयता' के बढ़िया तरह से उघरले बा। 'दाल-भात-तरकारी' के कलछुले-कलछुले परोसल सोहात नइखे। मन छँउछिआके रहि जाता। एके साथे बदलिए ओन्हा दीहल जात त ठीक रहित। प्रमोद तिवारी भोजपुरिया समाज के कुनैन पिअवले के बहाने ऑखि खोले क भरपूर कोसिस कइले बाड़े। 'हमार पन्ना' समसामयिक मुद्दन के उठावत एगो संवेदनशील सुसंस्कृत समाज बनावे के कोसिस मे लिखल जाता- ई देखि के बहुत सन्तोष भइल। उपयोगी स्तम्भन से जुड़ल आकर्षक रूप सज्जा वाली पत्रिका खातिर एक बार फिर बधाई।

डा० प्रेमशीला शुक्ल, उमा नगर, दक्षिणी, सी.सी.रोड - देवरिया

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

यह नगर आपका है!

इसकी सतत् रक्षा, निर्माण और रख–रखाव का दायित्व हम सभी का है...

☞ ध्यान रखें...

- अतिक्रमण न करें और न होने दें।
- गृहकर और जलकर का समय से भुगतान करें ताकि आपकी पालिका साधन-सम्पन्न बनी रहे।
- जल-वितरण प्रणाली ठीक रखने हेतु व्यर्थ पानी न बहायें।
- जल का आवश्यकतानुसार उपयोग करें।
- अपने नगर को साफ-सुथरा और प्रदूषण-मुक्त बनाने का सार्थक प्रयत्न करें।

आप इस नगर की गरिमा, भाईचारा एवं संस्कृति के पोषक हैं। इसे सदैव कायम रखें।

रमेश चन्द्र सिंह
(अधिशासी अधिकारी)

संजय उपाध्याय
(अध्यक्ष)

नगरपालिका परिषद्, बलिया

D:\Ashok-08\Pati\Pati-58 (March 2010).p65

रजि0 नं0– आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979) 'पाती–58–59'/मार्च–जून 2010

जिला पंचायत जनपदीय विकास में सदैव तत्पर है

जिला पंचायत के अन्तर्गत आने वाले शिक्षण-केन्द्रों, बाजारों, हाटों, सड़कों और मेलों के रखरखाव एवं सुव्यवस्था में सहयोग करना, पंचायत के नियम-निर्देशों का अनुपालन करना जनपद-नागरिकों का कर्तव्य है।

१. जिला पंचायत के नियम-निर्देशों का ध्यान रखें।
२. पंचायत के अन्तर्गत आने वाली भूमि एवं भवनों को अतिक्रमण से बचायें।
३. बाजार, हाट, मेलों एवं यातायात हेतु निर्मित सड़कों आदि के निर्धारित शुल्क की अदायगी करें।

अरविन्द कुमार आनन्द
अपर मुख्य अधिकारी
जिला पंचायत, बलिया

राजमंगल यादव
अध्यक्ष
जिला पंचायत, बलिया

कार्यालय : जिला पंचायत बलिया

स्वामित्व, प्रकाशक– सम्पादक डॉ0 अशोक द्विवेदी, 47– टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ0प्र0)
खातिर रवि आफसेट, बलिया से मुद्रित।

2010).p65